मकर संक्रान्ति, विक्रम संवत् और अग्रसेन जयन्ती

डॉ. हरवंशलाल ओबराय

सम्पादक एवं संकलनकर्ता

स्वामी संवित् सुबोधगिरि

डॉ. हरवंशलाल ओबराय समग्र

खण्ड 1 : राष्ट्रीय समस्याएं और इतिहास

खण्ड 2 : महापुरुष : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व

खण्ड 3 : धर्म-दर्शन-संस्कृति-उत्सव-विज्ञान एवं मनोविज्ञान

खण्ड 4 : वेदान्त दर्शन की वैज्ञानिकता

खण्ड 5 : गीता दर्शन की सार्वभौमिकता

प्रकाशक एवं वितरक :
स्वामी संवित् सुबोधगिरि
श्री नृसिंह भवन
संन्यास आश्रम, शिव मन्दिर
भीनासर 334403
बीकानेर (राजस्थान)
मो. : 09413769139

अन्य पुस्तक प्राप्ति स्थान :

- श्री सुशील कुमार ताम्बी
  प्रज्ञा साधना आध्यात्मिक पुस्तक केन्द्र
  A/3 आर्य नगर
  एन.के. पब्लिक स्कूल के पास
  मुरलीपुरा, जयपुर 302039
  फोन : 0141-2233765
  मो. : 09829547773

- **ज्ञान गंगा प्रकाशन**
  पाथेय भवन,
  बी-19, न्यू कॉलोनी, जयपुर
  दूरभाष : 0141-2371563

- **अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना**
  आप्टे भवन, केशव कुंज, झण्डेवाला
  नई दिल्ली 110055
  फोन : 011-23675667

- **जागृति प्रकाशन**
  श्री कृष्णानन्द सागर
  एफ-109, सेक्टर-27, नोएडा 201301
  दूरभाष : 0120-2538101
  मो. : 09871143768

प्रथम संस्करण : 2013 ई.

प्रतियां : 500

मूल्य : चालीस रुपये मात्र

आवरण : गौरी शंकर आचार्य

मुद्रक :
सांखला प्रिंटर्स, विनायक शिखर
शिवबाड़ी रोड, बीकानेर 334003

MAKAR SAMKRANTI, VIKRAM SAMWAT AUR
AGRASEN JAYANTI : Dr. Harbans Lal Oberai (Hindi)
Edited by Swami Samvit Subodhgiri ₹ 40

प्रकाशकीय

डॉ. हरवंशलाल ओबराय समग्र के प्रथम खण्ड से मकर संक्रान्ति, विक्रम संवत् और तृतीय खण्ड से अग्रसेन जयन्ती (भाषण) संकलित है। परम पूज्य गुरुदेव स्वामी संवित् सोमगिरिजी महाराज के आशीर्वाद से प्रकाशित हो रही है। हमेशा की तरह सांखला प्रिंटर्स ने पूर्ण सहयोग करते हुए, श्रेष्ठ सुझाव देते हुए तत्परता से मुद्रण कार्य को सुन्दरता से सम्पन्न किया। उनके प्रति विशेष आभार है।

शिवाकांक्षी

—स्वामी संवित् सुबोधगिरि
सम्पादक व संकलनकर्ता
मो. 09413769139

अनुक्रम

मकर संक्रांति : (भाषण)

आज मकर संक्रांति पर्व अपने देश का ही नहीं वरन् सारे भू-मण्डल का, सारी मानव जाति का एक महान् पर्व है। यह मानव जाति जिस भू-मण्डल पर जीती है उसे हम पृथ्वी कहते हैं, धरती माता कहते हैं। वेद में कहा है—माता भूमि पुत्रोऽहम् पृथ्वियाः। भूमि मेरी माता है और मैं इस पृथ्वी का पुत्र हूँ। धरती के अनेक पुत्रों के जन्मोत्सव हम मनाते हैं। पर मकर संक्रांति स्वयं धरती माता का ही जन्मोत्सव है। यह धरती माता के जन्मने का दिन है, जिस दिन हमारी धरती सूर्य से पृथक् होकर स्वतंत्र ग्रह के रूप में सूर्य की प्रदक्षिणा करने लगी। सामवेद के तांड्य ब्राह्मण में लिखा—तस्मातपनाद्वै क्षमोत्क्रम्यमघामाच्छंत् (ता.ब्रा. 2/1/3)

उस प्रतप्त अग्निपिण्ड सूर्य से पृथक् होकर यह धरती परिक्रमा करती हुई, उत्क्रमण करती हुई मघा नक्षत्र की ओर गयी। यह धरती का सूर्य से जन्म लेकर घूमते हुए मघा नक्षत्र की ओर जाना, यह मकर संक्रांति का ही महत्व है। आज संध्या के समय आपने सूर्य को जब क्षितिज पर डूबते हुए देखा होगा तो उस समय पश्चिमी क्षितिज पर सूर्य अस्त हो रहा है और पूर्वी क्षितिज पर मघा नक्षत्र विराजमान है। इसलिये आज का दिन माघी का पर्व है। मकर संक्रांति का पर्व है। यह पर्व प्रातःकाल सूर्य के उदय से माना जाता है। महीने का नाम उस नक्षत्र के मुताबिक होता है जो नक्षत्र उस दिन सूर्यास्त के समय पूर्वी क्षितिज पर लगा हो। जब चित्रा नक्षत्र हो तो चैत्रमास होता है। जब क्षितिज पर विशाखा नक्षत्र लगा हो तो वैशाख मास होता है। जब ज्येष्ठा नक्षत्र हो तो ज्येष्ठ मास होता है। अश्लेषा नक्षत्र हो तो आषाढ़ मास होता है। इस तरीके से मघा नक्षत्र जिस दिन लगा हो क्षितिज पर उस दिन से माघ मास होता है। इसलिये आज से माघ मास प्रारम्भ हो गया।

धरती माता की सूर्य से जन्म की गाथा और धरती द्वारा सूर्य की प्रदक्षिणा, इसका वैज्ञानिक ज्ञान हमारे ऋषियों को था। इसकी तुलना में अगर हम बाइबिल को देखें और कुरान शरीफ को देखें, तो हम देखेंगे कि उन लोगों को धरती के सूर्य से जन्म की वैज्ञानिक व्याख्या प्राप्त नहीं हुई। बाइबिल में स्पष्ट लिखा है कि धरती चपटी है और 17वीं शताब्दी तक (केवल तीन सौ वर्ष पहले तक) पश्चिम के लोग यही मानते रहे कि धरती चपटी है। क्योंकि 17वीं शताब्दी में रोम का एक

वैज्ञानिक गलैलियो, जिसने पहली बार टेलीस्कोप (दूरवीक्षण) यंत्र बनाया, उसने यह सिद्ध करने की कोशिश की कि बड़े ग्रहपिण्ड बीच में रहते हैं और छोटे-छोटे पिण्ड उस बड़े ग्रह की परिक्रमा करते हैं। इस आधार पर उसने सिद्ध किया कि सूर्य धरती से बहुत बड़ा है, इसलिये बीच में है और हमारी धरती सूर्य से छोटी होने के कारण सूर्य की प्रदक्षिणा करती है। उसने कहा कि धरती गोल है और यह घूमते हुए सूर्य की प्रदक्षिणा करती है। यह उसने 17वीं शताब्दी में कहा। लेकिन रोम के राजा ने वहाँ के पादरियों के दबाव से उसके ऊपर यह आरोप लगाया कि वह एक कुफ्र कह रहा है। वह एक गुनाह की बात कह रहा है। इसलिये वह एक अपराधी है और उसको उठाकर कारागार में डाल दिया। उसने अपील की कि मुझे एक अवसर दिया जाय। मैंने जो कहा है उसे प्रयोगशाला में सिद्ध करके बता सकता हूँ। उसको अवसर दिया गया। इटली में एक पीसा नामक स्थान है। उस पीसा में एक लिविंग (Living) टावर है, एक गुंबद (मीनार) है जो झुका हुआ है। किसी भूचाल में वह झुक गया था और झुका हुआ गुंबद वैसा का वैसा खड़ा है। लोग अचम्भे में हैं कि वह गिरता क्यों नहीं है? लेकिन पिछले 1500-1600 साल से वह झुका हुआ मीनार खड़ा है। सारे संसार के जो सात आश्चर्य गिने जाते हैं, उन सात आश्चर्यों में से एक आश्चर्य उसको भी माना जाता है। झुके हुए पीसा के मीनार पर गलैलियो ने, जो बहुत बड़ा वैज्ञानिक था, अपने द्वारा आविष्कृत एक दूरबीन लगाया। उस दूरबीन से उसने शनि ग्रह को दिखाया। आजकल भी आधी रात के बाद आसमान में आप शनि ग्रह को देख सकते हैं। शनि ग्रह में क्या है? मुख्य ग्रहपिण्ड बीच में है और उसके दर्जनों उपग्रह हैं। दर्जनों उपग्रह उसके इर्द-गिर्द इतनी तेजी से चक्कर लगाते हैं कि खुली आंख से देखने पर लगता है कि यह तारा निरंतर हिल रहा है। अथवा और ध्यान से देखें तो लगता है भगवान श्रीकृष्ण का चक्र सुदर्शन हो। बीच में तारा स्थिर है इर्द-गिर्द घूमते हुए तारे ज्योति का एक वृत्त बना देते हैं। ज्योति का दायरा बना देते हैं। यह शनि का दर्शन है। शनि का चित्र भी आप देखेंगे (या शनि को आप जब भी देखें) आधी रात को यदि आप जागें, तो आसमान में शनि आपको दिखेगा और सब तारों में शनि को पहचानना सबसे आसान है। क्योंकि उस तारे में हलचल नजर आती है और उसके इर्द-गिर्द लगातार एक चक्र घूम रहा है। गलैलियो ने उन पादरियों को कहा, 'आइये—देखिये। अपनी आंख से देख लीजिये बड़ा ग्रहपिण्ड बीच में रहता है और छोटे उपग्रहपिण्ड उसकी परिक्रमा करते रहते हैं।' पादरी लम्बे चोगे पहने हुए, सिर हिलाते हुए कह रहे हैं It is Impossible-It is Impossible यह असम्भव है। यह असम्भव है। ऐसे बोलते हुए सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते गए और जब उन्होंने दूरबीन से देखा तो सचमुच शनि ग्रह बीच में है और उपग्रह बड़ी तेजी से घूम रहे हैं। तब एक पादरी ने दूसरे पादरी को देखकर कहा, घूम तो रहा है। घूमता है। इस पर बड़ा बिशप जो था उसने कहा

This man is a Magician यह आदमी तो जादूगर है। तारे-वारे कुछ नहीं घूमते हैं। इसका यंत्र ही घूम रहा होगा। तारे आदि कुछ नहीं घूमते। उस बेचारे गलैलियो को पुनः कारागार में डाल दिया और सता-सता कर मारा।

एक दूसरा वैज्ञानिक था जिसका नाम कोपरनिकस था। कोपरनिकस ने भी खोज की थी कि धरती गोल है पर गलैलियो की गति देखकर उसने सारी उम्र भर अपनी पुस्तक को प्रकाशित नहीं किया। प्रकाशित करूंगा तो मुझे भी मार डालेंगे। क्योंकि रोम के चौराहे पर ब्रूनो को जीवित जला दिया गया था। इसलिये कि वह कहता था कि धरती गोल है। जीनो जो दार्शनिक था उसको उसके घर समेत जला दिया गया। जिन्होंने गलैलियो को सताया, जिन्होंने कोपरनिकस को धमकाया, जिन्होंने ब्रूनों को जलाया, जिन्होंने जीनो को घर समेत जला दिया ऐसे लोग क्या वैज्ञानिक हो सकते हैं। यह विज्ञान की स्थिति थी। 17वीं शताब्दी तक रोम में और सारे यूरोप में उनको पता ही नहीं था 'धरती' गोल है। क्योंकि बाइबिल कहती है धरती चपटी है इसलिये अंधविश्वास से उसी को मानते थे।

जब अमेरीका को खोजने वाला कोलम्बस स्पेन की रानी के दरबार में गया तो उसने जाकर प्रार्थना की कि मुझे सहायता दी जाय। मैं भारत की खोज करूंगा। आप जानते हैं अमेरीका की खोज कैसे हुई? यूरोप में भारत के मोर, भारत के मूंगे, भारत के मोती, भारत की मलमल, भारत के गरम मसाले, भारत की चन्दन की लकड़ी, भारत का शतरंज का खेल, भारत की वस्तुएं रोम और सारे यूरोप में खूब प्रचलित थी और उनको बहुमूल्य माना जाता था। भारत का रेशम, भारत की मलमल (बहुत महीन मलमल) जिसका पूरा थान शरीर पर लपेट लेने पर भी शरीर के अंग झलकते थे इन्हीं बहुमूल्य वस्तुओं के उदाहरण हैं।

इसलिये यूरोप के लोग भारत को सोने की चिड़िया मानते थे। इसलिये भारत की खोज के लिये कोलम्बस निकला। आप इतिहास जानते हैं तो आपको पता होगा कोलम्बस निकला था भारत की खोज के लिये। गलती से गलत दिशा में चला गया तो अमेरीका पहुँच गया और अमेरीका को ही उसने India मान लिया और वहाँ के लोगों को Indian कहना शुरू किया। बाद में उनको Red Indian कहने लगे। वहाँ के आदिवासियों को Red Indian बोलने लगे। कोलम्बस India की खोज में निकला था। तो खोज में निकलने से पहले स्पेन की रानी के दरबार में गया, मेरी सहायता करो। मुझे जहाज दो, मुझे पैसा दो। मैं भारत की खोज करूंगा। स्पेन की रानी ने पूछा हमें कैसे पता लगेगा कोलम्बस कि तुमने भारत की खोज कर ली? भारत बहुत दूर कहीं होगा। तुमने उसको खोज लिया इसका पता कैसे लगेगा? उसने कहा कि मैं कुतुबनुमा जो (मिग्नानेट दिशासूचक) सूई है उस कंपास की सूई से सीधे चलता जाऊंगा। भारत पहुँचने के बाद मैं उसी

सीध में आगे बढ़ता जाऊंगा और फिर धरती गोल है इसलिये मैं वापस लौटकर यहीं स्पेन में आ जाऊंगा। तुरंत एक पादरी उठा। अरे कोलम्बस! तेरी जबान खींच ली जायेगी। तू झूठ बोलता है, तू कुफ्र बोलता है। अरे! जानता नहीं है गलैलियो की क्या गति हुई, ब्रूनो की क्या गति हुई, जीनो की क्या गति हुई? तेरी जबान खींच ली जायेगी। तू धरती को गोल कहता है। कोलम्बस सहम गया। तब एक बूढ़ा मंत्री उठा। उसने कहा, तुम एक नौजवान को निरुत्साहित क्यों करते हो, उसमें जोश है, होश है, उसको खोज करने दो। धरती गोल है या चपटी है इससे क्या फर्क पड़ता है? तो उसने कहा— कोलम्बस तुम इतना बताओ जब तुम भारत की खोज में निकलोगे, और तुम कहते हो धरती गोल है, धरती तो गोल है नहीं। क्योंकि बाइबिल कहती है धरती चपटी है। पर केवल तर्क के लिये, यदि दलील के लिये हम थोड़ी देर के लिये मान लेवें कि धरती गोल है तो बताओ बेटा! जब तुम धरती की गोलाई पर पहुँचोगे तुम्हारा पांव फिसल जायगा, तुम समुद्र में गिर जाओगे। तुम लौटकर कैसे आओगे? ऐसे मूर्ख लोग राज्य करते थे 17वीं शताब्दी तक स्पेन के राज्य में। और जो मंत्री बने हुए उनको इतनी अक्ल नहीं कि धरती की गोलाई पांव फिसलाने वाली नहीं है। धरती इतनी विशाल है उस पर चलते-चलते गोलाई पता ही नहीं लगती है और आदमी वापस लौटकर भी आ सकता है। तो धरती की गोलाई की कल्पना पश्चिम को बिल्कुल नहीं थी। वेद में हमारी धरती के लिये नाम आया भूगोल। भू-गोल का अर्थ भूमि गोल है। सामवेद के तांड्य ब्राह्मण में स्पष्ट लिखा है कि धरती का सूर्य से जन्म हुआ और वह घूमती हुई, परिक्रमा करती हुई मघा नक्षत्र की ओर गयी। अर्थात् आज के दिन धरती माता का सूर्य से जन्म हुआ।

बाइबिल के अनुसार, 'प्रभु ने संसार 6 दिनों में बनाकर सातवें दिन विश्राम किया। प्रश्न उठता है दिन किसने बनाये? सूर्य-चन्द्र के बिना और पृथ्वी के अपनी धुरी पर निरन्तर घूमे बिना रात और दिन कैसे बन सकते हैं? ईसाई पादरियों द्वारा गलैलियो, कोपरनिकस, ब्रूनो और जीनो पर अत्याचार केवल कट्टरवादी धार्मिक विश्वास था। अब Government कॉलेज लाहौर की एक घटना सुनाऊं। Government कॉलेज लाहौर में एक भूगोल के प्रोफेसर थे। वह प्रोफेसर इस्लाम धर्म को मानने वाले थे। वह क्लास रूम में पढ़ाते थे—सुनो, विद्यार्थियो सुनो! यह धरती हमारे सूर्य से पैदा हुई है। क्लास रूम में यह पढ़ाते। क्लास रूम से ज्यों ही बाहर निकलने लगे तो क्लास रूम की कक्षा की दहलीज पर मुसलमान लड़कों ने उनसे कहा, प्रो. साहब! आपने कुफ्र कहा है। आपने झूठ बकवास कहा है। आपने गुनाह की बात कही है। प्रो. साहब ने पूछा, क्यों जी क्यों? देखो जी, कुरान शरीफ ने साफ लिखा है अल्लाह-ताला ने धरती बनायी है, जमीन बनायी

और जमीन के अंधेरे को दूर करने के लिये अल्लाह-ताला ने दो लालटेन बना दिये—सूरज और चांद। उन्होंने कहा—कुरान शरीफ में साफ लिखा है धरती के बाद सूर्य-चांद उत्पन्न हुए। अल्लाह ने सूरज को बाद में बनाया। आप कहते हैं धरती सूर्य से पैदा हुई। तो आप कुफ्र कह रहे हैं। तो प्रोफेसर घबरा जाता है। हां-हां, आप ठीक कहते हो। तो विद्यार्थी लोग गुस्से में कहते हैं, क्या ठीक है? तब उसने कहा, जब आप क्लास रूम में हों तब मैंने जो बताया वह ठीक है और क्लास रूम के बाहर जब हों तब आप जो कह रहे हैं वह सही है। क्लास रूम के अन्दर यह बात सच है कि हमारी धरती का जन्म सूर्य से हुआ है। क्योंकि परीक्षा में यह नहीं लिखोगे तो शून्य मिलेगा। तो परीक्षा में यही लिखो कि हमारी धरती का जन्म सूर्य से हुआ और क्लास रूम के बाहर कोई कहे कि मानते क्या हो? तो कहना हम कुरान की बात मानते हैं। धरती पहले थी। सूर्य बाद में हुआ। लोगों ने कहा ऐसा क्यों? तो उसने कहा कुरान की बात नहीं मानेंगे तो काफिर हो जाएंगे और परीक्षा में कुरान की बात लिखेंगे तो फेल हो जायेंगे। तो मुश्किल यह है कि मनुष्य के जानने और मानने में अगर खाई हो, जान कुछ और रहा है, मान कुछ और रहा है उसको बौद्धिक बेईमानी कहते हैं। Intellectual dishonesty कहते हैं। अक्ल का बेईमान है जो जान कुछ और रहा है मान कुछ और रहा है। ये अक्ल की बेईमानी है। यह मनुष्य के मन को बड़ा कष्ट देती है। कुरान कहता है कुछ और मानो, अक्ल उसकी कहती है कुछ और जानो। तो अक्ल में और ग्रंथ में जो लड़ाई है वो भारतीय दर्शनों में नहीं है। भारतीय शास्त्रों में नहीं है। हमारे शास्त्र स्पष्ट कहते हैं—तस्मातपनाद्वै—क्षमोत्क्रम्यमघामाच्र्छत् (ता.ब्रा. 2/1/3) इस मघा नक्षत्र के दिन, मकर संक्रांति के दिन हमारी धरती उस प्रतप्त अग्निपिण्ड सूर्य से पृथक् होकर मघा नक्षत्र की ओर गयी और उसने सूर्य की परिक्रमा शुरू कर दी। इसकी विस्तृत व्याख्या आगे स्कन्दपुराण में है। स्कन्दपुराण ने कहा कि धरती माता ने सूर्य से जन्म पाने के बाद अपने जन्मदाता भगवान् अंशुमाली को, भगवान् सूर्य को नमस्कार किया। धरती का नमस्कार करना क्या हुआ? धरती के उत्तरी ध्रुव का साढ़े 66° अंश के कोण पर सूर्य की ओर झुकना है। धरती का उत्तरी कोण झुक गया। यह धरती का सूर्य को नमस्कार है। धरती ने स्वयं घूमते हुए सूर्य की प्रदक्षिणा शुरू कर दी और धरती ने कहा, हे मेरे जन्मदाता सूर्य-नारायण भगवान् अंशुमाली! मैं आपकी पुत्री हूँ। जैसे अच्छी बेटी पिता द्वारा दिखाये गये मर्यादितगृहपथ के भीतर चलती है, उसको कोई भय नहीं होता है, इसी तरह से एक अच्छी सुशील बेटी के समान जब तब आपके द्वारा निर्दिष्ट मर्यादा के दायरे के भीतर चलती रहूँगी। मुझे कोई भय नहीं और ज्यों ही मर्यादा के ग्रहपथ का उल्लंघन करूंगी तो मैं खण्ड-खण्ड हो जाऊंगी। यह बहुत बड़ी वैज्ञानिक बात स्कन्दपुराण ने लिखी है। धरती माता का सूर्य को नमस्कार करना। धरती माता का

स्वयं घूमते हुए सूर्य की प्रदक्षिणा करना और यह कहना कि जब तक मैं मर्यादा के ग्रहपथ पर हूँ तब तक मुझे कोई भय नहीं है और मर्यादा के पथ का उल्लंघन करने पर मैं चूर-चूर, खण्ड-खण्ड हो जाऊंगी। एक बेटी को बाप ने भेजा Women's College में, बेटी! जाओ पढ़ने के लिये। पढ़ने के बाद College समाप्ति पर सीधे रिक्शा लेकर घर आ जाना। वह मर्यादा में रहती है उसको कोई भय नहीं है और कोई बेटी बाप के कहने के बावजूद, माता के समझाने के बाद भी, कभी किसी सहेली के यहाँ चली जाय, कभी सिनेमा देखने चली जाय, कभी नाच देखने चली जाय, कभी किसी Boy friend के साथ घूमने लग जाय—वह मर्यादा का उल्लंघन करती है तो जैसे बेटी बाप की मर्यादा का उल्लंघन करने से भ्रष्ट हो जाती है उधर धरती भी कहती है कि अगर मैं मर्यादा का उल्लंघन करूंगी तो मैं चूर-चूर हो जाऊंगी। तो यह है सूर्य और धरती की गाथा।

एक वर्ष जब पूरा हुआ परिक्रमा का। निर्विघ्न एक वर्ष में परिक्रमा पूरी हुई, तब ऋषियों ने धरती की सूर्य की निर्विघ्न परिक्रमा पूरी होने की खुशी में वर्ष के अंतिम दिन एक खुशी का यज्ञ किया। बहुत बड़ा यज्ञ। पवित्र अग्नि जलायी गयी और आनंद की रात्रि मनायी गयी। आनंद की रात्रि के लिये संस्कृत का शब्द है 'लौहड़ी'। 'लौहड़ी' का मतलब होता है आनंद मनाना। उसी से पंजाब में 'लौड़ी' शब्द बन गया। इसमें बहुत बड़ी अग्नि जलायी जाती है। मुहल्ले के सब लोग इकट्ठे होते हैं। उस अग्नि को पवित्र अग्नि मानते हैं। उसे कोई पांव से छूता नहीं है। कोई ऊपर से फांदता नहीं है। लोग उसमें जैसे प्राचीनकाल में यज्ञों में आहुति देते थे वैसे इसमें नयी फसल का अन्न भेंट किया जाता है। नयी फसल में तिल होते हैं। इसलिये तिल भेंट किया जाता है। नयी फसल में गन्ना होता है। इसलिये गुड़ भेंट किया जाता है, इस फसल में मक्का होता है इसलिये मक्का भेंट किया जाता है। इस फसल में चावल होता है अतः चिवड़ा भेंट किया जाता है। इन सबको अग्नि में भेंट करके फिर मित्रों को प्रसाद रूप में बांटते हैं। रिश्तेदारों के घर पहुँचाते हैं। यह परम्परा उत्तर भारत में पंजाब, दिल्ली, उत्तरप्रदेश के भागों में है। आर्य समाज के द्वारा यह प्रायः सारे भारतवर्ष में मनाया जाता है।

इस प्रकार धरती माता के जन्म का यह नया दिन केवल मनुष्य के द्वारा बनाये गये वर्ष का नया वर्ष नहीं है। ये धरती के जन्म का वर्ष होने से सचमुच नया वर्ष इसी से मानना पड़ेगा। धरती माता, जो सूर्य की ओर झुकी हुई है और अपने गिर्द घूमती है और सूर्य की प्रदक्षिणा करती है, इसके क्या-क्या चमत्कार होते हैं। धरती के अपने इर्द-गिर्द घूमने से दिन-रात होते हैं। यदि धरती अपने इर्द-गिर्द नहीं घूमती तो दिन-रात नहीं बनते। कुछ भाग सदा ही सूर्य के सामने रहता और कुछ भाग में सदा ही अंधेरा रहता। धरती घूम रही है अपने इर्द-गिर्द और अपने जनक,

अपने को पैदा करने वाले सूर्य के इर्द-गिर्द घूमती है, इसलिये धरती के सूर्य की प्रदक्षिणा करने से और धरती के उत्तरी ध्रुव के सूर्य की ओर झुके रहने से छः ऋतुएं बनती हैं। भिन्न-भिन्न छः ऋतुएं इसी कारण से बनती हैं।

आज का जो दिन है मकर संक्रांति, ये सारे वर्ष में सूर्य की जो गति है धरती की अपेक्षा से। धरती वालों को घूमता हुआ सूर्य दिखता है। धरती की अपेक्षा से सूर्य की गति है। सूर्य सबसे अधिक जितना अधिक दक्षिण में जा सकता है यहाँ तक मकर रेखा को छूकर फिर ऊपर उठना शुरू होता है। इसलिये सबसे ठण्डा दिन और सबसे छोटा दिन होने के बाद फिर जिस दिन से दिन पुनः बढ़ने शुरू होते हैं, दिनों में उष्णता आनी शुरू होती है, दिनों में उष्मा आनी शुरू होती है, रात्रि घटनी शुरू होती है उस दिन सूर्य की उत्तरायण यात्रा शुरू होती है। सूर्य जा रहा था दक्षिण जितना जा सकता था मकर रेखा तक गया। मकर रेखा के नीचे जा नहीं सकता। मकर को छूने के बाद अब उठना शुरू करता है, जब मकर को छूकर उठना शुरू हुआ इसलिये मकर संक्रांति। आज के बाद दिन बड़े होंगे। दिन अधिक गरम होंगे। रात्रि छोटी होगी। इसको गीता में भगवान ने कहा—अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम् (8/24) जिसमें अग्नि का ताप, सूर्य का ताप बढ़ता जाता है। दिन बड़े होते जाते हैं। प्रकाश अधिक होता जाता है। उसको उत्तरायण कहते हैं।

धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम्। गीता—8/25

जिसमें धुआं अधिक हो, धुंध अधिक हो, ठंडक अधिक हो, रात्रि अधिक हो, प्रकाश कम हो वह काल दक्षिणायन कहा जाता है। तो मकर संक्रांति से लेकर रक्षाबंधन तक छः महीने उत्तरायण का काल और रक्षाबंधन से लेकर मकर संक्रांति तक छः महीने दक्षिणायन का काल। उत्तरायण को देवताओं का दिन कहा गया। उसी आधार पर तिलकजी ने The Arctic home in the Vedas (आर्यों का मूल निवास स्थान) नामक पुस्तक लिखकर ये सिद्धांत भी कुछ समय के लिये रखा लगता है कि छः मास का दिन और छः मास की रात्रि उत्तरी ध्रुव में सम्भव है। उत्तरी ध्रुव यह जो दक्षिणायन अभी बीता है उत्तरी ध्रुव के निवासियों को छः महीने तक सूर्य के दर्शन नहीं होते, सूर्य दक्षिणायन में चला गया था। उत्तरी ध्रुव में बिल्कुल प्रकाश नहीं आता। छः महीने की रात्रि हुई और आज के दिन प्रथम बार उत्तरी ध्रुव वालों को सूर्य के दर्शन हुए इसलिये वेद में वर्णन आता है लम्बी रात्रि थी। उसमें अंधेरा था। उस समय लोगों को हाथ से हाथ नहीं सूझता था, आकाश के तारों के प्रकाश में थोड़ा-थोड़ा दिखता था। लोग लगातार धुंध में, अंधेरे में रहते और बड़ा कष्ट महसूस होता था। उसके बाद उत्तरायण का दिन आया और जब सूर्योदय हुआ तब लोगों ने सूर्यात्मा का स्मरण किया, लोगों ने गायत्री गायी और कहा—भर्गो देवस्य धीमहि। धीयो यो नः प्रचोदयात्। हे सूर्य, हे जगत् के

आलोककर्ता, भुवन भास्कर! विश्व को देदीप्यमान करने वाले असंख्य स्वर्णिम रश्मियों से प्रकाशित होने वाले सूर्य, आपके अत्यन्त कल्याणकारी तेज को धारण करते हैं। हे प्रभु! हमें ज्ञान दो, प्रकाश दो, विवेक दो, बुद्धि दो, शक्ति दो, वीर्य दो, तेज दो, ओज दो, अन्तर-बाह्य प्रकाश से भर दो, हमारी बुद्धियों को चमका दो। हमारी बुद्धियों को ज्योतित कर दो। इस तरह की प्रार्थना वेद के ऋषियों ने गायी है।

इसका अर्थ तिलक महाराज ने यही लगाया कि सम्भवतः प्राचीनकाल के आर्य ऋषि उत्तरी ध्रुव के वासी थे। जो भी हो यह निश्चित बात है कि यह उत्तरायण का काल, शुभ काल है, यह उत्थान का काल है, यह प्रगति का काल है, यह उष्मा का काल है, यह ज्योति का काल है, यह विकास का काल है। यह समुन्नति का काल है। यह बहुत ही शुभ लक्षणों वाला काल माना जाता है। इसलिए गीता में भगवान ने कहा और प्राचीनकाल से हमारी यही परम्परा रही, जितने सुकृत हों, शुभ कर्म हों, वे उत्तरायण के समय करने चाहिये और जो शुभ करने वाला व्यक्ति है वह उत्तरायण में शरीर त्याग करके जाता है। तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः (8/24) ब्रह्मज्ञानी लोग जब उत्तरायण में शरीर त्याग करके जाते हैं तब वे ब्रह्म को प्राप्त हो जाते हैं। वे ब्रह्म में लीन हो जाते हैं, उनका मोक्ष हो जाता है।

वही उत्तम कर्म करने वाले लोग जब दक्षिणायन में शरीर त्याग करके जाते हैं, तो दक्षिणायन में शरीर को त्यागकर जाने वाले लोग स्वर्ग तक जाते हैं, स्वर्ग में अपने कर्मों के फल भोगते हैं और फल भोगने के बाद फिर संसार में लौटकर आते हैं। ये उत्तरायण और दक्षिणायन का अन्तर है।

तीन सप्ताह पहले आपने गीता जयन्ती पर्व मनाया। गीता जयन्ती पर्व वह पर्व है जिस दिन भगवान् ने कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन को गीता सुनायी। जिस दिन महाभारत का युद्ध शुरू हुआ। भीष्म पितामह शरशय्या पर लेट गये। शरशय्या पर पड़े-पड़े उन्होंने पाण्डवों को उपदेश दिया भगवान् श्रीकृष्ण के आग्रह पर।

अनुशासन-पर्व को देखिये। बहुत उच्च कोटि का उपदेश उन्होंने दिया। उसमें इमरजेंसी की कोई बात नहीं है जो इन्दिरा गाँधी ने लागू की। विनोबा भावे मौन थे। उन्होंने इसे अनुशासन पर्व कहा। कांग्रेस ने कह दिया कि विनोबा भावे इसका समर्थन करते हैं। विनोबा भावे ने जब मौन खोला तब उन्होंने स्पष्ट किया। अनुशासन पर्व है धर्म का अनुशासन। आत्मा का अनुशासन। वह उपदेश उन्होंने युधिष्ठिर महाराज को दिया। युधिष्ठिर! मेरे लिये शोक मत करना। मैं इच्छा मृत्यु हूँ। मैं शरशय्या पर पड़ा हुआ हूँ। मृत्यु मेरे वश में है। मैं उत्तरायण शुरू होने पर शरीर त्यागूंगा। इसलिये उत्तरायण की प्रतीक्षा कर रहे थे वो। मैं अपनी इच्छा से त्याग रहा हूँ शरीर। इसलिए मेरे लिए बिल्कुल शोक मत करना। तुम शंख बजाना,

पुष्पवृष्टि करना, दरिद्रनारायण को भोज देना। मेरे लिये शोक बिल्कुल मत करना। उसी दिन से तुम धर्म-ध्वजा को इन्द्रप्रस्थ नगरी के ऊपर, जो उस समय का दिल्ली नगर था, फहराना और उस दिन फिर से धर्म राज्य प्रारम्भ करना। ये मकर संक्रांति का पर्व भीष्म पितामह के निर्वाण का पर्व है। जिस दिन उन्होंने शरीर छोड़ा और जिस दिन इन्द्रप्रस्थ नगरी पर, महाभारत के महासमर के पश्चात्, जिसमें अधर्म का नाम शेष हो गया, अधर्म का अंश-वंश समाप्त हो गया और उसके बाद धर्म की ध्वजा फहरायी। उस धर्म की ध्वजा फहराने का, धर्म की विजय का, धर्म राज्य की विजय का यह पावन दिवस है। इस दिन लोग सूर्य की विशेष पूजा करते हैं। इसलिये कि सूर्य हमारी धरती का आधार है। सूर्य ने पृथ्वी को आधार दिया हुआ है। पृथ्वी उसके आकर्षण से टिकी हुई है। सूर्य यदि आधार न देवे तो पृथ्वी टिक नहीं सकती। आकाश में आप पत्थर फेंकें और पत्थर घूमता रहे यह कभी सम्भव है? पत्थर कैसे घूमता रहेगा आकाश में, कब तक घूमता रहेगा? उसके लिये आकर्षण की शक्ति चाहिये जो उसको बांधे। धरती एक गोला है, एक गेंद है। आकाश में घूम रही है। किसके आकर्षण से घूम रही है? सूर्य के आकर्षण से घूम रही है। सूर्य ने अपने आकर्षण से उसको बांधा हुआ है। तभी वह घूम रही है। सूर्य अगर उसको आधार न देवे तो वह खंड-खंड हो जायेगी। इसलिये धरती के स्थायित्व का आधार सूर्य है। पृथ्वी की परिक्रमा का आधार भी सूर्य है। धरती के जन्म का आधार भी सूर्य है। धरती पर जितने वृक्ष, वनस्पतियाँ हैं उनको अंकुरित कौन करता है? यदि दो-चार महीने सूर्य दिखे नहीं, सब पेड़-पौधे, वनस्पतियाँ, वृक्ष मर जायेंगे। जितने जीव-पशु-मनुष्य हैं सब मर जायेंगे। यदि सूर्य सप्ताह दो सप्ताह नहीं दिखे तो लगेगा प्रलय आ गया है। सूर्य उगते ही बीज अंकुरित होते हैं। सूर्य उनमें मिठास भरता है। सूर्य फलों को पकाता है। सूर्य ही अन्न में रस पैदा करता है। सूर्य ही हमारे शरीर को ताप दे रहा है। सूर्य ही हमें बचा रहा है। सूर्य के बिना कुछ नहीं बचेगा। इसलिये सूर्यात्मा का आज स्तवन किया जाता है। आज के दिन लोग विशेष करके नदी में जाकर स्नान करते हैं।

प्रयागराज में बहुत बड़ा मेला लगता है। माघ मेला आज के दिन से प्रारम्भ होता है। यह माघ मेला एक मास के लिये चलता है। पूरे माघ मास में चलता है। इसका शुभारम्भ आज के दिन होता है, जब माघ मास में सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है। तब सब लोग तीर्थपति, तीर्थराज प्रयाग को जाते हैं। ऐसे तीर्थराज प्रयाग में ऐसा हुआ कि—

एहि प्रकार भरि माघ नहाहीं। पुनि सब निज निज आश्रम जाहीं॥
प्रति संबत अति होइ अनंदा। मकर मज्जि गवनहिं मुनिबृंदा॥

(मानस 1/44/1)

इसी प्रकार माघ महीने भर स्नान करते हैं और फिर सब अपने-अपने आश्रमों को चले जाते हैं। हर साल वहाँ इसी तरह बड़ा आनन्द होता है। मकर में स्नान करके मुनिगण चले जाते हैं।

एक बार भरि मकर नहाए। सब मुनीस आश्रमन्ह सिधाए॥
जागबलिक मुनि परम बिबेकी। भरद्वाज राखे पद टेकी॥

(मानस 1/44/2)

एक बार पूरे मकर भर स्नान करके सब मुनीश्वर अपने-अपने आश्रमों को लौट गये। परम ज्ञानी याज्ञवल्क्य मुनि को चरण पकड़ कर भारद्वाज जी ने रख लिया।

याज्ञवल्क्य राजा जनक के गुरु थे। बड़े विवेकी थे। भारद्वाज मुनि ने उनके चरण पकड़ करके उनको रोक लिया। क्या बात है? आपसे मैं विशेष सत्संग करना चाहता हूँ। तब भारद्वाज ऋषि ने याज्ञवल्क्यजी को कहा, मुझे रामायण का रहस्य बताइये। राम कथा मुझे सुनाइये।

रामचरितमानस के चार घाट हैं। एक घाट पर शंकर भगवान् पार्वती को रामकथा सुना रहे हैं। एक घाट पर याज्ञवल्क्य मुनि भारद्वाजजी को रामकथा सुना रहे हैं। एक घाट पर कागभुसुंडी गरुडजी को रामकथा सुना रहे हैं। और चौथे घाट पर तुलसीदास भक्तों को रामकथा सुना रहे हैं। तो रामायण कथा का मूल भी इस मकर संक्रांति पर्व से जुड़ा हुआ है।

रामायणकाल में एक और महान् विभूति हुए। भगवान् परशुराम। और सहस्रार्जुन से संघर्ष हो गया परशुराम का। फिर परशुराम ने क्रोध में आकर 21 बार क्षत्रियों का नाश कर दिया? तब उसके पितरों ने आकाशवाणी में कहा, परशुराम! आप क्या कर रहे हो? एक राजा ने भूल की। उसके बाद 21 बार आप सब क्षत्रियों को मारकर उनके रक्त के कुण्ड भर रहे हैं। इतना पाप मत करो। तुम्हें इस पाप का प्रायश्चित्त करना चाहिये। तब परशुराम ने तपस्या की। तपस्या करके इस पाप का प्रायश्चित्त किया, तो आकाशवाणी हुई—प्राग्ज्योतिषपुर में जहाँ सूर्य सबसे पहले उगता है—असम में जो अरुणाचल का प्रदेश है, जहाँ सूर्य का सबसे पहले अरुणोदय होता है—वहाँ पर एक कुण्ड है, उस कुण्ड में जाकर मकर संक्रांति के दिन स्नान करना। मकर संक्रांति के दिन परशुराम ने अपने पाप विमोचन के लिये तप किया। तप के बाद पाप-प्रक्षालन के लिये उस कुण्ड में स्नान किया, जिसे आजकल परशुराम कुण्ड कहते हैं। जिन्होंने रेडियो पर समाचार सुने होंगे उनको समाचार मिला होगा कम से कम 14-15 लाख लोगों ने आज उस परशुराम कुण्ड में मकर संक्रांति का स्नान किया। मकर संक्रांति पर लोग परशुराम कुण्ड में स्नान करने जाते हैं।

मकर संक्रांति में लोग प्रयागराज में स्नान करने जाते हैं। और एक महान् महत्त्व इसका है कि गंगा का अवतरण जो हुआ वह हुआ ग्रीष्म ऋतु में। जून के लगभग गंगा सप्तमी पड़ती है जब गंगा का अवतार हुआ। गंगा निकली। लेकिन गंगा, गंगासागर में कब पहुँची? इतनी जल्दी नहीं पहुँची। आज तो गंगोत्तरी से चलने वाला गंगाजल का बिन्दु मुश्किल से 48 घण्टे के भीतर गंगासागर में पहुँच जाता है। क्योंकि 50-60 मील की गति से पानी बहा जा रहा है। गंगा प्रायः दो हजार मील की यात्रा करती है। लेकिन जब गंगा लाये थे भगीरथ तब बड़ा कठिन काम था—गंगा को मार्ग देना, पहाड़ियों को चीरना, रास्ता बनाना, आगे ले जाना। तो आज का दिन, मकर संक्रांति का जो दिन है इस दिन गंगा गंगासागर तक पहुँची। उस सुन्दरवन के क्षेत्र में राजा भगीरथ के पूर्वज भस्म हुए पड़े थे। कपिल मुनि की आंखों की ज्योति से निकलने वाली अग्नि से भस्म हो गये थे। उन्हीं पितरों के उद्धार के लिये ही तो गंगा लाये थे भगीरथ! इसलिये गंगा लाने का वास्तविक मनोरथ आज के दिन पूरा हुआ जब गंगा, गंगासागर में पहुँची और राजा भगीरथ के पितरों का उद्धार हो गया। इसलिये गंगासागर का मेला वर्ष में आज के दिन ही लगता है। सालभर गंगासागर का द्वीप सागर में डूबा रहता है। इन्हीं चार-छः दिनों के लिये पानी घटता है, द्वीप प्रकट होता है। द्वीप के अन्दर कपिल का बना हुआ मन्दिर है। उनका प्राचीन आश्रम का स्थान है। वहाँ भी लाखों-लाख लोग जहाजों में जाकर के तीर्थं में स्नान करते हैं। आज गंगा के गंगासागर में मिलने का दिन है।

परशुराम के पाप-प्रक्षालन, भीष्म पितामह के निर्वाण-प्राप्ति का दिन और महाभारत के युद्ध के बाद धर्म की जय का दिन और धर्म ध्वजा के आज आकाश में फहराने का दिन। सूर्य के मकरगत होने पर आप एक छाता ले लेवें। छाते में आठ फांक होती है। आठ फांक की जगह आप बारह फांक वाला छाता लेवें, छाते पर काला कपड़ा न हो, ऊपर पॉलीथिन का, प्लास्टिक का पारदर्शी कपड़ा लगा लेवें और छाते की नोक को आप ध्रुवतारे की ओर लगा देवें। ध्रुवतारे की ओर लगाकर देखिये। आकाश के अन्दर जितने तारे हैं, बारह भागों में बंट जायेंगे। एक-एक भाग में जो तारों का समूह है तारों की जो राशि है, उसका चित्र बनता दिखाई देगा। लक्ष्मी जैसा चित्र बने तो उसको मकरराशि कहते हैं। धनुष जैसा चित्र बने धनुराशि हो गया। कन्या जैसा चित्र बने तो कन्याराशि हो गया। इस तरह से केकड़े जैसा चित्र बने तो कर्कराशि हो गया। तो 12 राशियाँ बन जाय। यह हुआ क्रांतिवृत्त। क्रांतिवृत्त जब सूर्य एक राशि को पार करके दूसरी राशि में प्रवेश करता है तब होती है संक्रांति। एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करने पर संक्रांति अतः वर्ष भर में 12 संक्रांति आती है। सूर्य की दृष्टि से महीने का प्रथम दिन। प्रत्येक गुरुद्वारा में इस दिन विशेष प्रसाद बंटता है। विशेष पाठ होता है। 12 संक्रांतियों में

कुछ संक्रांतियों का विशेष महत्त्व है क्योंकि उनके साथ बहुत बड़ा इतिहास जुड़ा हुआ है। उनमें से एक संक्रांति यह है मकर संक्रांति। और तीन महीने बाद आने वाली एक संक्रांति है जिसको हम मेष संक्रांति, वैशाख संक्रांति कहते हैं। इसलिये दो संक्रांतियाँ बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इसी तरह कर्क संक्रांति भी बहुत महत्त्व की है।

इस दिन के साथ जो सूर्यपूजा का महत्त्व है इसको आप ध्यान में रखें। आपको अचम्भा होगा जानकर कि यह सूर्यपूजा सारे यूरोप में चलती थी। रोम में एक बहुत बड़ा सूर्य का मन्दिर था। सूर्य के मन्दिर को बोलते थे आदित्यालय। आदित्यालय का अर्थ आदित्य का मंदिर सूर्य का मंदिर। आज शनिवार है। कल का दिन इतवार। इतवार नाम कहाँ से आया? इतवार नाम आया आदित्यवार से। मारवाड़ी लोग अभी भी बोलते हैं दितवार। आदित्यवार से आ का लोप हो गया तो दितवार। और 'द' का लोप हो गया तो इतवार। इसलिये आदित्यवार, दितवार, इतवार। इस तरह से आदित्यालय था। सूर्य का मन्दिर था रोम में। जिसका खण्डहर अभी भी विद्यमान है जिसको Dental of अपोलो कहा जाता है। उस आदित्यालय का नाम हुआ दितालय। 'आ' का लोप हुआ तो 'दितालय'। और 'द' का लोप हुआ तो इतालय।

जैसे हिमालय का उच्चारण करते-करते लोग आसानी के लिये हिमालिया बोल देते हैं। इसी तरह से इतालय को लोगों ने इतालिया बोल दिया। इतालिया पूरे इटली देश का नाम हो गया। अभी तक इस देश का नाम है इतालिया। अंग्रेजी वाले इसको इटली-इटली बोलते रहते हैं।

सारे यूरोप में सूर्यपूजा चलती थी। आपको बड़ा अचम्भा होगा। सौ वर्षों में संक्रांति का जो तिथि पर्व है एक दिन आगे बढ़ जाता है। इसलिये 1800 साल पहले जब ईसाइयत ने प्रवेश किया रोम में, तब सूर्यपूजा का यह पर्व 25 दिसम्बर को चलता था। 25 दिसम्बर को सूर्यपूजा चलती थी मकर संक्रांति। 1800 साल में मकर संक्रांति 18 दिन आगे चली गयी। 5 दिन दिसम्बर के और 13 दिन जनवरी के। 18 दिन आगे चली गयी है। आप कहेंगे सो कैसे? 115 साल पहले 12 जनवरी को मकर संक्रांति पड़ती थी। क्योंकि स्वामी विवेकानंद का जन्म मकर संक्रांति के दिन हुआ। मकर-संक्रांति का पर्व था। ब्राह्ममुहूर्त का समय था, प्रातःकाल लोग सूर्य को जलांजलियाँ दे रहे थे। उसी समय विश्वनाथ दत्त को शुभ संवाद मिलता है विवेकानन्द (नरेन्द्र) का जन्म हुआ है। पुस्तकों में स्पष्ट लिखा है 12 जनवरी को मकर संक्रांति के दिन विवेकानन्द का जन्म हुआ। तो 115 साल पहले मकर संक्रांति 12 जनवरी को थी। धीरे-धीरे 13 जनवरी को आयी। अब मकर संक्रांति 14 जनवरी की ओर जा रही है। 300 वर्ष पहले दशमेश गुरु गोविन्दसिंह महाराज ने, जिनकी जयन्ती कल के दिन पड़ती है, 15 जनवरी को। उन्होंने 300 साल पहले

खालसा पंथ की स्थापना की वैशाखी के पर्व 10 अप्रैल को अब 300 साल बाद वही वैशाखी 13 अप्रैल को पड़ने लगी। वही वैशाखी 13 अप्रैल से 14 अप्रैल की ओर जा रही है। तो संक्रांति 100 साल में लगभग एक दिन आगे बढ़ जाती है। इसलिये जो क्रिसमस नाम से पर्व ईसाई लोग मनाते हैं ईसा के जन्म दिन के रूप में वह ईसा का जन्म दिवस नहीं है। वह वास्तव में सूर्यपूजा का पर्व है। मकर संक्रांति है जो रोम में 1800 साल पहले 25 दिसम्बर को मनायी जाती थी। इस बात को राधाकृष्णन् ने अपनी पुस्तक Recovery of Faith में स्पष्ट लिखा है। राधाकृष्णन् ने भी इसके बारे में लिखा और मैंने भी कुछ शोधपत्र लिखे हैं। मकर संक्रांति के पर्व को ईसाइयों ने चुरा लिया है और क्रिसमस के नाम से प्रचारित किया है। क्योंकि ईसा का जन्म वास्तव में ठण्डी ऋतु में हुआ ही नहीं। बाइबिल में स्पष्ट वर्णन है जब ईसा का जन्म हुआ तो रात भर पनहारिन पानी भरती रही। क्या दिसम्बर की कड़ाके की सर्दी में पनहारिन पानी भरेगी। रातभर चरवाहे वंशी बजाते रहे। रातभर भेड़ों के झुंड को लेकर खेतों में बैठे हुए वंशी बजाते रहे। क्या कड़ाके की सर्दी, नसों में खून जम जाय ऐसी दिसम्बर की सर्दी में चरवाहे वंशी बजायेंगे? भेड़ें चरती रहेंगी? यह असम्भव बात है। ईसा का जन्म सर्दी की ऋतु में हुआ ही नहीं। ईसा का जन्म वसन्त ऋतु में हुआ होगा यदि हुआ होगा तो!

इसलिये मकर संक्रांति पर्व चुरा लिया गया है सूर्यपूजकों से और उसको क्रिसमस नाम दे दिया है। और जब तक ईसाइयत का प्रवेश नहीं हुआ था यूरोप में तब तक ईसाई लोग शनिवार को चर्च लगाते थे। क्योंकि बाइबिल में स्पष्ट लिखा है कि God ने प्रथम छः दिनों में सृष्टि बनाई और सातवें दिन आराम किया और इसलिये कहा गया उस दिन हमें ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिये। तो प्रथम छः दिन कहाँ से गिनेंगे? जितने कैलेंडर हैं सबसे ऊपर Sunday लिखा रहता है। प्रथम दिन Sunday, Monday, Tuesday और सातवां दिन शनिवार है। Friday छठा दिन है। इसलिये शनिवार को चर्च लगते थे। सारे इजराइल में, यूरोप में ईसाइयत के प्रवेश से पहले। अभी यहूदी लोग शनिवार को चर्च लगाते हैं और Seven days Adventist Mission के लोग भी शनिवार को चर्च लगाते हैं। जब ईसाइयत पहुँची रोम में तो उन्होंने देखा कि सूर्यपूजक सूर्य के दिन 'इतवार के दिन' सूर्य मन्दिर में बहुत बड़ी मात्रा में लोग पूजा करते हैं तो उन्होंने राजा को कहा कि हमें कोई तरीका बताओ कि हम कैसे ईसाइयत का प्रचार करें? तो राजा ने कहा तुम चालाकी करो। तुम सूर्यपूजकों के मंदिर में घुस जाओ। सूर्य मंदिरों में बड़ी भारी सूर्य की प्रतिमा बनी रहती है। चारों ओर बहुत बड़ी-बड़ी किरणें निकल रही हैं। उसके सामने तुम बैठ जाओ। वो पूजा करते हैं उस समय तुम भी सिर हिलाते रहो। उसके बाद तुम भी अपनी पूजा कर लो। सूर्य प्रतिमा के सामने तुम भी अपना छोटा सा

क्रास रख देना। छोटा सा लकड़ी का क्रास रख देते थे सूर्य प्रतिमा के सामने। लोग पूछते थे What is this? यह क्या है? तो पादरी लोग चालाकी से कहते थे This is your Sun God. This is Son of God. यह तुम्हारा Sun God सूर्य देवता है, यह हमारा Son of God है ईसा को Son of God भी कहते हैं। यह खुदा का बेटा है। अतः Son of God कहकर चालाकी से उसको लगा देते थे। धीरे-धीरे उन्होंने सूर्य के मन्दिरों को भी तोड़-फोड़ करके गिरजाघर बना लिया। इतवार को सूर्य पूजा के दिन उन्होंने चर्च लगाने शुरू कर दिये और उन लोगों को धर्मान्तरित करके ईसाई बनाया। इसलिये सूर्य पूजा बहुत प्राचीन है।

इंग्लैण्ड में, लन्दन शहर में अभी भी एक पुराना मंदिर सूर्य का है मित्रोद्योदस कहते हैं। मित्रोद्योदस क्या है? उदीयमान सूर्य का मंदिर। मित्र सूर्य को कहते हैं। इसलिये मित्र, मित्राय ये सब नाम हैं। सूर्य का स्तवन करके और फिर यज्ञ करके नये अन्न को मित्रों में बांटना। ये सब परम्परा इसके साथ है।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इसी उत्तरायण के पर्व को पवित्र मान कर शान्ति निकेतन में जो उनका अपना निवास है उसका नाम रखा उत्तरायण। उन्होंने माघ के मास में माघ मेला शुरू किया। प्रतिवर्ष शांति निकेतन में अभी भी माघ मेला लगता है जिसमें वहाँ के सब पर्व, उत्सव, छात्रों के दीक्षान्त उत्सव इसी माघ मास में होते हैं। यह पर्व सबसे अधिक महत्त्व का है।

गाँव-गाँव में, नदी तीरों पर स्थान-स्थान पर, तीर्थों पर, दो नदियों के संगम स्थल पर, जहाँ कहीं नदियाँ मिलती हैं लोग तीर्थ करने जाते हैं। कोई किसी स्थान पर, कोई किसी स्थान पर। जहाँ पर दो नदियाँ मिलती है उसी को गंगा मान करके, उसमें स्नान करके अपने तन को पवित्र करते हैं, अपने मन को पवित्र करते हैं।

जीवन में नया संक्रमण, नयी क्रांति, नया परिवर्तन लाने का संकल्प करते हैं। संक्रमण का मतलब क्या है? संक्रांति। संक्रांति का मतलब क्या है? अच्छी प्रकार से क्रांति करना। आपने नारे सुने समग्र क्रांति, समूल क्रांति, सम्पूर्ण क्रांति। तो क्रांति शब्द का मतलब है बदलाव। लेकिन क्रांति अगर विचारपूर्वक न की जाय तो क्रांति कई बार घातक भी हो जाती है। अगर हम बदलने को लग जायें तब कल कोई कहे कि तुम अपना नाम बदल दो, तुम अपनी माँ बदल दो तो कैसे काम चलेगा? किसी को कहो अपना घर बदल दो, कोट बदल दो, तुम अपना पेट बदल दो, अपना शरीर बदल दो, तुम अपनी आंखें बदल दो। इनके बदलने से काम नहीं चलेगा। इसलिये इसको सूझ-बूझ से करना पड़ेगा। जो चीज खराब हो गई है, जो चीज विकृत हो गयी है, जो रूढ़ि खराब हो गई है उसको बदलना है। तो किसको बदलना किसको नहीं बदलना इसकी अक्ल होनी चाहिये। यदि नाक के ऊपर किसी के मक्खी बैठती है, और कोई उसे कहे नाक साफ करो। तो इसका

मतलब यही होता है नाक के ऊपर जो मल लगा हुआ है, नाक के ऊपर जो मीठा लगा हुआ है, नाक के ऊपर जो गन्दगी लगी हुई है उसको साफ कर दो ताकि नाक पर मक्खी न बैठे। अगर कोई मूर्ख यह समझे नाक साफ करने का मतलब है तलवार पकड़कर नाक ही साफ कर देना। तब तो और भी मक्खी बैठेगी। जब नाक ही नहीं रहेगा तब मक्खियाँ भरपूर आकर बैठेंगी। इसलिये क्रांति के नाम पर अपने देश की नींव न हिल जाय और समाज का ही नाश न हो जाय, हम अपने समाज को ही न मार डालें, इसका विचार करना पड़ेगा।

इसलिये जो कार्ल मार्क्स की रक्त-क्रांति है। कार्ल मार्क्स कहता है खूनी क्रांति करो, खूनी क्रांति करो। तो महात्मा गाँधी कहते हैं कि तुम्हारा इलाज जो है वह रोग से ज्यादा भयानक है। तुम इलाज करना चाहते हो समाज में जो विषमता है, गरीब-अमीर का जो फर्क है, इसका हम क्रांति के द्वारा इलाज करेंगे। गाँधीजी कहते हैं तुम्हारा इलाज रोग से ज्यादा बुरा है। रोग तो है भेद का और तुम इलाज करने चले हो हत्या का। तो हत्या के द्वारा ये भेद मिटेगा क्या? खूब रक्तपात हो जायगा। इसलिये सूझ-बूझ से, अक्ल से, समझदारी से, सम्यक् प्रकार से क्रांति करना है यह संक्रांति। अपने जीवन में बदलाव आये। जो बुराइयाँ हैं उनको हटायें, पिछले वर्ष में जो कमियाँ रह गयी उसको हम दूर करें। समाज में जो रूढ़ियाँ हैं, उनको इस ढंग से साफ करें ताकि समाज बचे। समाज अधिक अच्छा बने। और रूढ़ियाँ हट जाय, उसकी बुराइयाँ दूर हो जाय। इस प्रकार सम्यक् क्रांति लाने का दिन यह संक्रांति है। बदलाव कैसे आता है? कैलेंडर आप टांग देते हैं। कैलेंडर टंगा हुआ है। कैलेंडर की 365 आंखें हैं। वे 365 आंखें बारी-बारी से आपकी ओर देखती हैं। अरे मानव! क्या आज के दिन बदलेगा? पूरा दिन प्रभात से सायंकाल तक वह तिथि आती है और आपकी ओर देखती रहती है और देखते-देखते संध्या को वह आंख मुंद जाती है। दूसरे दिन दूसरी आंख देखना शुरू करती है। अरे मनुष्य, क्या आज बदलेगा? और देखते-देखते संध्या को आंख मुंद जाती है। और हम वैसे के वैसे रहते हैं। हम यह कोशिश नहीं करते कि हम कल की अपेक्षा आज कुछ अच्छे बनें। बीते हुए वर्ष की अपेक्षा आज कुछ आगे बढ़ें। हम बिल्कुल उसी कोल्हू के बैल की तरह उसी चक्र में घूमते रहते हैं। इस कारण से काल की 365 आंखें हमारी ओर आशा की दृष्टि से देख-देख करके धीरे-धीरे मुंद जाती हैं। 365 आंखें पथरा जाती हैं कि यह मनुष्य कुछ बदलने वाला नहीं है। तब दिसम्बर की सीलन भरी दीवार पर दिसम्बर की शीत लहर से और खुली हवाओं से वह फटा हुआ कैलेंडर अविराम फड़फड़ाता है जैसे सूली पर मसीहा फड़फड़ाता है। जैसे ईसा सूली पर फड़फड़ा रहा है। हम उस कैलेंडर को उतार करके कूड़े में फेंक देते हैं और दूसरे मसीहा को सूली पर टांग देते हैं। हम बदलेंगे नहीं। तो क्या कैलेंडर बदलने से इंसान बदल जाता है? कैलंडर

बदलने से इंसान नहीं बदलता। अरे! मन को बदलने से इंसान बदलता है। संकल्प मजबूत करोगे तो बदल जाओगे। आज हम महासंक्रांति के दिन यदि संकल्प करेंगे कि हम पहले से अच्छे बनेंगे। आज तक हमने अपने अभागे समाज की कोई परवाह नहीं की। हमारे समाज में पड़ोस में बैठा हुआ व्यक्ति भूखा रहा। हमने अपने ज्ञान को बांटा नहीं। हमने ज्ञान प्राप्त किया। हमने अपने ज्ञान का अंश झोपड़ी में जाकर वनवासी से नहीं बांटा। कालेज में हम पढ़ने जाते हैं, जो कपड़ा पहनकर जाते हैं वे कपड़े क्या हम स्वयं अपने हाथ से बनाते हैं? नहीं! किसी तंतुकार के बेटे ने कपड़ा बनाया हमारे लिए। जो जूता पहनकर जाते हैं, स्वयं बनाते हैं? नहीं! किसी चर्मकार के बेटे ने हमारे लिये जूता बनाया। जो पेन्सिल का उपयोग करते हैं वह स्वयं बनाते हैं? नहीं! किसी कर्मकार के बेटे ने हमारे लिये पेन्सिल बनायी। जिस भवन में पढ़ते हैं वह भवन हम स्वयं बनाते हैं? नहीं! किसी वास्तुकार के बेटे ने हमारे लिये भवन बनाया। जिस सुराही से पानी पीते हैं क्या स्वयं हमने बनायी? नहीं! किसी कुम्भकार के बेटे ने हमारे लिये सुराही बनायी। सबने हमको सहयोग दिया। और पढ़-लिख लेने के बाद भारत का ग्रेजुएट (Graduate) अपने ज्ञान का कुछ भी अंश-कुम्भकार के बेटे से, कर्मकार के बेटे से, वास्तुकार के बेटे से, चर्मकार के बेटे से, बांटता नहीं है। कुम्भकार, वास्तुकार, चर्मकार, कर्मकार का बेटा अनपढ़ का अनपढ़ रहा। हम उनकी मदद से पढ़-लिखकर Graduate हो गये। हमने इनकी परवाह नहीं की। हमको इनसे ज्ञान बांटने की फुरसत नहीं। दस हजार मील दूर से पादरी आता है। वह कहता हैं Ranchi (रांची) विश्वविद्यालय के पढ़े-लिखे Graduate हरामखोर हैं। वह तुम्हारी मदद से पढ़ा है। पर तुम्हें ज्ञान नहीं बांटता है। पर हमारे सीने में तुम्हारे लिये बहुत दर्द है। हम अपना देश बेल्जियम छोड़कर आये हैं। हम अमरीका जैसे देश को छोड़कर तुम्हारे देश में, तुम्हारे गाँव में आये हैं। हम तुम्हारी झोंपड़ी में आये हैं। हम तुम्हारे बच्चों की नाक पोंछते हैं। हम तुम्हारे बच्चों को A.B.C. लिखना सिखाते हैं, अंग्रेजी बोलना सिखाते हैं। और इस प्रकार उनका धर्मान्तरण द्वारा राष्ट्रान्तरण का क्रम प्रारंभ हो जाता है। अतः हम अपने कर्तव्य को समझें।

जिस समाज के स्नेह एवं सहयोग के बल पर हम पले-बढ़े, शिक्षित होकर योग्य बने, उस समाज के प्रति अपने दायित्व को भूलकर केवल स्वयं के एवं परिवार के पोषण-संवर्धन में लग जाते हैं। इस तरह से समाज के प्रति हम कृतघ्न नहीं बनें। तभी तो विदेशी पादरी हमारे ही समाज के पिछड़े हुए बंधुओं की निर्धनता और अशिक्षा का लाभ लेकर उन्हें धर्मान्तरित कर हमारे ही विरुद्ध खड़ा कर देते हैं। अतः समाज के प्रति कृतज्ञ बनें, उसके प्रति जो हमारा दायित्व है उसे निभायें। तभी हम सुखी, स्वस्थ अखण्ड भारत का निर्माण कर सकेंगे। अशांत विश्व को भी शांति की राह दिखा सकेंगे। और पुनः विश्वगुरु के पद पर आसीन हो सकेंगे।

विक्रम संवत् : (भाषण)

परम पवित्र भगवद् ध्वजदण्ड की अरुण त्यागमयी रश्मियों के छाया तले बैठे माननीय अधिकारी वर्ग और प्यारे स्वयंसेवक बंधुओ! हम नववर्ष प्रतिपदा उत्सव के उपलक्ष में नववर्ष की पूर्व संध्या को यह महोत्सव मना रहे हैं। प्रायः संसार भर में नये वर्ष की पूर्व संध्या को भी उत्सव मनाने की परम्परा है। उसको लोग New Year eve (ईव) कहते हैं, The evening before the new year नये वर्ष की पूर्व की संध्या। इसलिये इस दृष्टि से आज का यह उत्सव भी बहुत महत्त्वपूर्ण बन जाता है। एक वर्ष की परिपूर्ति हुई और नववर्ष के आगमन से पूर्व हम विगत वर्ष की गति-प्रगति पर विचार करके आगामी वर्ष की अगवानी के लिये मंगल कामनाएँ करते हैं।

यह नववर्ष प्रतिपदा क्या है? वेद के मंत्रों में परमेश्वर की स्तुति में कहा गया है—सम्वत्सरोसि परिवत्सरोसि हे परमेश्वर! तू ही संवत्सर है। तू ही परिवत्सर है। संवत्सर क्या है? संवत्सर का अर्थ है वर्ष का वह प्रथम प्रभात, जिससे वर्ष का शुभारंभ हो और जिस समय सारे भूमण्डल में एक साम्यावस्था, संवत्सर अर्थात् वत्सर-वार-दिन बराबर हो। दिन और रात बराबर हो, गर्मी-सर्दी बराबर हो, शीत-उष्ण संतुलित हो, प्रकृति में साम्यावस्था हो, उस विशेष घड़ी को जिस समय ये सब हो। उसी समय से संवत्सर प्रारम्भ होता है। ये कोई मजाक की बात नहीं है जब जिसके मन में आया शुरू कर दिया नववर्ष। एक जनवरी को क्या घटना घटी? प्रकृति की कौन-सी विशेष घटना घटती है? जनवरी को प्रकृति में कौन सी साम्यावस्था होती है, कौन से दिन-रात बराबर होते हैं, कौन-सी विशेष बात है जो एक जनवरी में है और 31 मार्च में नहीं है। कुछ नहीं है। यह मूर्खों का नया वर्ष है। ऐसे ही शुरू कर दिया है। वास्तव में उस नये वर्ष के पीछे केवल रोम के एक मूर्ख पादरी की मूर्खता का इतिहास छिपा हुआ है। क्योंकि सारे संसार भर में इसी समय हमारे संवत् के समय ही संवत्सर शुरू होता है। अभी एक-दो दिन में आप समाचार पढ़ेंगे कि ईरान ने नवरोज का दिन मनाया। नवरोज माने नया दिन। उनका नया वर्ष अभी भी इसी से शुरू होता है। एक-दो दिन में आप समाचार पढ़ेंगे कि थाई देश (श्याम) ने नववर्ष का उत्सव मनाया क्योंकि उनका नववर्ष उसी से शुरू होता है। फिर सुनेंगे कम्बुज ने मनाया।

सारे भूमण्डल को काल की गणना भारत ने सिखायी, सारे यूरोप में भी यही चलता था। उसका प्रमाण मैं आपको दे रहा हूँ। स्वयं रोम के विश्वविद्यालय में इस विषय पर हमने कुछ शोधपत्र दिये। India's contribution in the formulation of Modern Calendar System. (आजकल के कैलेंडर सिस्टम को बनाने में भारत की देन)। आधुनिक कालगणना में भारत की देन। फिर रांची, पटना, भागलपुर, रेडियो स्टेशन पर मेरी वार्ताएं दीं। वह क्या दिन है? सिर्फ संवत् के दिन बता रहा हूँ। बाकी सब तो बहुत विशाल हो जायेगा। जब दिन-रात बराबर होते हैं। उत्तरी गोलार्ध में भी, दक्षिणी गोलार्ध में भी। पूरे 12 घण्टे का दिन पूरे 12 घण्टे की रात्रि। गर्मी और सर्दी तुला में तौलकर बराबर। शीत और उष्ण संतुलित। बाहर की प्रकृति और अंतःप्रकृति संतुलित। उस समय जब प्रकृति में कोई क्षोभ नहीं। प्रकृति में कोई आन्दोलन नहीं, प्रकृति में कोई उत्पात नहीं। न तेज आंधी-बवंडर है न तेज वर्षा है। न तेज घाम है न तेज शीत है। सब संतुलित है। उस ऋतु का नाम है वसंत। उस वसंत ऋतु को वेदों ने कहा, 'मुखं ऋतुनां इह कुसमाकर' वसंत ऋतु सब ऋतुओं की मुखिया है। मुखिया कौन होता है? मुखिया नेता की तरह आगे चलता है। इसलिये वह 'मुखं ऋतुनां इह कुसमाकर' ये वसंत सब ऋतुओं की मुखिया है। इसलिये सबसे आगे-आगे चलती है। तो सबसे पहले यह वसंत ऋतु आती है। इसलिये इसी से वर्ष आरम्भ होता है। वसंत का परिपाक कब होता है। जब आपने होली उत्सव मनाया। यह वसंत का परिपाक है। 15 दिन पहले। लेकिन वर्ष का शुभारम्भ कोई न कोई दिन संवत् मनाते ही हैं। होली भी संवत् का ही उत्सव है। लेकिन वर्ष का शुभारम्भ कृष्ण पक्ष से न होकर शुक्ल पक्ष से होना चाहिये। यह प्राचीन वैदिक परंपरा है। इसलिये वर्ष का शुभारंभ। आज तक अमावस्या कृष्ण पक्ष की चली। होली से लेकर अब तक 14 दिन चला यह कृष्ण पक्ष। कल से शुक्ल पक्ष होने वाला है। इसलिये चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से वर्ष शुरू होता है। इसलिये इससे वर्ष आरंभ होता है। इस वर्ष मलमास होने से हमारा संवत् का दिन कुछ आगे बढ़ गया है। अप्रेल में मना रहे हैं। प्रायः 21 मार्च से 23 मार्च के बीच में आता है यह संवत्सर का दिन। प्राचीन रोम में और सारे यूरोप में 21 मार्च से ही नववर्ष शुरू होता है मार्च प्रथम मास होने के कारण। दिसम्बर का नाम संस्कृत का नाम है। आप इनसाइक्लोपेडिया आफ ब्रिटेनिका, इनसाइक्लोपेडिया ऑफ अमेरीका और विश्व इतिहास की कोई पुस्तक खोज करके देख लें। आपको स्पष्ट मिलेगा दिसम्बर का नाम है दस अम्बर अर्थात् वर्ष ने तब दस ओढ़न ओढ़ लिये हैं। दस कपड़े ओढ़ लिये हैं। इसलिये दसवें महीने का नाम दिसम्बर होता है। यह निश्चित ऐतिहासिक बात है इसको काटने वाले के लिये हम अपना सर कलम करवाने के लिये तैयार हैं क्योंकि हमने रोम में इस तथ्य को चुनौती के साथ कहा है और उन्होंने स्वीकार किया है। दिसम्बर दसवां मास था। नवम्बर नवां मास था।

अष्टम्बर आठवां मास था जिसको अक्टूबर कहा है। सेपटेम्बर सातवां मास था। संस्कृत में कहते हैं षष्ठ, छठा। 'षा' का ईरानी भाषा में, पारसी भाषा में 'स' का 'ह' हो गया। इसलिये षष्ठ का हो गया हष्ठ। हष्ठ अभी भी जो फारसी जानते हैं उनको पता होगा हष्ठ का मतलब होता है छठा। उस हष्ठ का लैटिन में हो गया 'हेक्स' इसलिये हेक्सम्बर। हेक्सेगन आप जानते हैं ज्यामिति वाले, इसलिये पहले था पेटेम्बर अर्थात् पाँचवां महीना। जिसको आज आप अगस्त कहते हैं, उसका नाम था हेक्सम्बर। उसमें ईसा से कोई डेढ़ सौ साल पहले एक रोम के राजा का जन्म हुआ। उस रोम के राजा ने कहा, इस छठे महीने को मेरे नाम पर कर दीजिये। इसका नाम अगस्त कर दो। तो छठे महीने का नाम आगस्ट किया गया। अब चालाकी देखिये आज अगस्त आठवां महीना बना हुआ है। यह चालाकी कब से शुरू हुई यह आपको अभी बता रहा हूँ। तो छठे महीने का नाम जो हेक्सम्बर था उसका अगस्त किया गया। क्योंकि राजा अगस्ट का जन्म उसमें हुआ। ईसा से डेढ़ सौ साल पहले। फिर ईसा से 57 वर्ष पहले जब भारत में सम्राट् विक्रमादित्य का राज्य था। लगभग उसी समय रोम में जो यूरोप का विक्रमादित्य कहा जाय, जो बड़ा प्रतापी राजा था जूलियस सीजर। उस जूलियस सीजर का राज्य था। जूलियस सीजर और विक्रमादित्य समकालीन थे। जूलियस सीजर का जन्म हुआ पाँचवें महीने में। इसलिये उसने कहा, इस पाँचवे महीने पेटेम्बर का नाम मेरे नाम पर कर दो जुलाई। जुलाई पाँचवां महीना था जिसे आज सातवां महीना कहते हैं। कहाँ पर गड़बड़ी हुई है उसे मैं अभी बताता हूँ। जुलाई पाँचवां महीना था। अगस्त छठा महीना था। सेपटेम्बर सातवां महीना था। जुलाई का जुलाई से पहले पेटेम्बर नाम था। अगस्त का अगस्त से पहले हेक्सम्बर नाम था। अर्थात् पेटेम्बर पाँचवां महीना, हेक्सम्बर छठा महीना। सेपटेम्बर सातवां महीना, अक्टूबर आठवां महीना, नवंबर नवां महीना, दिसम्बर दसवां महीना। यह क्रम चलता था। जब यह क्रम चल रहा था, यह क्रम चलते-चलते सन् 1587 तक यह क्रम चलता रहा। 1587 में रोम में एक पोप हुआ। उस पोप का नाम था पोप 'ग्रेगरी'। उस पोप ग्रेगरी ने रोम के राजा को कहा, हम लोगों ने बहुत वर्षों तक Leap के वर्ष के दिन 28 रखे, 29 नहीं रखे। इसलिये हमारी काल की गणना में कुछ फर्क पड़ गया। जो वर्ष 'चार' पर भाग हो जाय उसको Leap (लीप) का वर्ष कहते हैं। उसमें फरवरी के 28 के स्थान पर 29 दिन होते हैं। उसने कहा, हम 28 ही गिनते रहे इसलिये हमारी गलती हो गयी। तो इस गलती को सुधारने के लिये हमें कुछ करना पड़ेगा। फरवरी 28 का कैसे बन गया। इसे समझें। बड़ा रोचक इतिहास है। जब अगस्ट का जन्म छठे महीने में हुआ, उसने कहा, भई देखो, बाकी महीनों के तीस दिन है, और मेरे महीने के दिन अधिक होने चाहिए। मैं बड़ा राजा हूँ। इसलिये मेरे महीने के दिन 31 दे दो। तो ज्योतिषियों ने कहा, 31 कहाँ से लायें? उन्होंने

कहा, 'एक' फरवरी से छीन लो। फरवरी से छीन लिया। फरवरी के 29 दिन रह गये और अगस्त का एक दिन बढ़ गया। 31 दिन हो गये। जब जूलियस सीजर का राज्य आया। जूलियस सीजर ने कहा, पाँचवें महीने का नाम जुलाई कर दो, तो उन्होंने कहा, अच्छा महाराज! कर देते हैं। इसमें भी 31 दिन कर दो। महाराज! 31 कहाँ से करें? तो उसने कहा, अगस्त तो सिर्फ रोम का राजा था। मैं सारे यूरोप का राजा हूँ और दुनिया भर के लोगों को गुलाम बना-बना कर, अपने रथों में बांध-बांध कर घूमता रहा हूँ रोम की सड़कों पर। मेरे जैसा प्रतापी राजा कौन होगा? तो मेरे महीने के दिन 30 के स्थान पर 31 होने चाहिए। उन्होंने कहा 31 दिन होने चाहिए तो 31 दिन कहाँ से लायें? तब उन्होंने कहा, फरवरी से एक और छीन लो। इसलिये फरवरी से एक दिन और छीन लिया। इसलिये बेचारी फरवरी के पास 28 दिन रह गये। क्योंकि एक छीन लिया जुलाई ने, एक छीन लिया अगस्त ने। तो पोप ग्रेगरी ने सन् 1587 में कहा कि Leap के वर्ष में 29 दिन होने चाहिये थे। यह गणना हमने नहीं कीं। इसलिये साल को ठीक करने के लिये 21 मार्च की जगह हमको वर्ष को एक जनवरी से शुरू करना पड़ेगा और वर्ष को दो महीना 21 दिन पीछे घसीटना पड़ेगा। राजा ने आज्ञा निकाल दी इस वर्ष से नया वर्ष अब 21 मार्च से शुरू नहीं होगा। यह एक जनवरी से शुरू होगा। लोगों ने विद्रोह कर दिया। लोगों ने कहा, पोप ग्रेगरी! तू कौन नामुराद आ गया है संसार में? खुदा ने हमें उम्र दी और तू हमारी उम्र लूटने वाला आ गया। किसी की उम्र बनती थी 18 साल और 18 साल में उसको नौकरी मिल सकती थी। सेना में या सरकारी नौकरी में भर्ती हो सकता था। अब पोप ग्रेगरी की इस चालाकी से उसकी उम्र कम हो गयी वह Under age हो गया। वह नौकरी से वंचित हो गया और उसने कहा, ओ पोप ग्रेगरी! तू हमारी उम्र का लुटेरा है। किसी को Retire होना था अढाई-पौने तीन माह बाद। उसे अढाई-पौने तीन माह पहले Retire होना पड़ गया। उन सब लोगों ने विद्रोह कर दिया। जनता ने जब विद्रोह कर दिया कि पोप ग्रेगरी को मारेंगे और जलती हुई लकड़ियाँ लेकर उसको मारने के लिये दौड़े। पोप ग्रेगरी भाग गया। पोप ग्रेगरी भागकर जंगल की ओर गया। जनता ने उसका काफी पीछा किया। अंत में पोप ग्रेगरी ने तंग आकर आत्महत्या कर ली। उस पोप ग्रेगरी जिसने वर्ष को पीछे घसीटा उसकी चालबाजी से दिसम्बर, जो दसवां महीना था, 12 वां बन गया। नवम्बर जो नवां महीना था, 11 वां बन गया। अक्टूबर आठवां महीना था दसवां बन गया। ये सब वर्ष पीछे घसीटने से हुआ है। अन्यथा उससे पहले सारे भूमण्डल में यह वर्ष प्रतिपदा नया वर्ष इसी समय से शुरू होता था। जिस समय हमारा विक्रम संवत् शुरू होता था और विक्रम संवत् से पहले सृष्टि संवत् भी इसी से शुरू होता था। ज्योतिष के हिमाद्रि ग्रंथ के अनुसार—

चैत्रे मासे जगद ब्रह्मा संसर्ज प्रथमेऽहवि,
शुक्लपक्षे समग्रन्तु, तदा सूर्योदये सति।

अर्थात् चैत्र मास, शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्माजी ने जगत् की रचना की।

सृष्टि इसी से शुरू हुई। इसलिये कोई तमाशा नहीं है जब चाहे कोई वर्ष शुरू कर दे। अरे, यह सृष्टि के प्रारंभ का दिन है। ब्रह्मा ने सृष्टि प्रारम्भ की और हमारा सृष्टि संवत् चल रहा है। लगभग दो अरब वर्ष से सृष्टि संवत् है। एक अरब 97 करोड़ और 987 ऐसा करके सृष्टि संवत् हमारा है। तो ये सृष्टि संवत्। सतयुग संवत् इसी से। त्रेता संवत् इसी से। द्वापर संवत् इसी से। कलि संवत् इसी से। युधिष्ठिर संवत् इसी से। कलियुग में पुनः सम्राट् नरवीर विक्रमादित्य ने 2035 वर्ष पहले, बर्बर-शकों को परास्त करके पुनः उसी प्राचीन दिवस को यश देते हुए उन्होंने विक्रम संवत् प्रारम्भ किया। ये शक लोग कौन थे? चीन के उत्तर में एक तारीम नदी है। उस तारीम नदी के काठे (किनारे) में बहुत ही बर्बर जाति के लोग बसते थे जिनको शक कहते थे। बहुत बर्बर। वे बस्तियों को घेर लेते। चारों ओर आग लगा देते और स्त्रियों और बच्चों को मारते। लूट-पाट करना, आग लगाना, नाश करना, यही उनका काम-धंधा था। चीन भी उनसे तंग था। चीन उनसे इतना तंग था कि शकों के आक्रमणों से बचने के लिये दुनिया की सबसे बड़ी दीवार दीवारे-चीन, जो दुनिया का अजूबा मानी जाती है, को उसने इसीलिये बनाया कि उन शकों से बचा जा सके। फिर भी शक उनको तंग करते थे। वे शक लोग वहाँ से बढ़ते-बढ़ते सिक्यांग की तरफ आये। जिसे आज चीनी तुर्किस्तान कहते हैं। वहाँ उन्होंने बहुत लूट-खसोट मचायी। उसके बाद वे ईरान की तरफ आये। ईरान के राजा को उन्होंने एक पत्र लिखा। यदि अपनी प्रजा की भलाई चाहते हो, और अपनी राजधानी को लूट-पाट से, खून-खराबे से, आगजनी से बचाना चाहते हो तो अपने सिर को काटकर एक थाल में परोसकर हमारे पास भेज दो। अब सोचिये, ऐसा प्रस्ताव कोई किसी राजा को कर सकता है? उन्होंने ऐसा भयानक प्रस्ताव उसको किया और चेतावनी दी—अगर तू ऐसा नहीं करेगा, तो हम तुझे मारकर तेरी खोपड़ी को काटकर, और तेरी खोपड़ी का गुद्दा निकाल करके उस खोपड़ी का प्याला बनाकर तेरा ही खून पीयेंगे। यह इतिहास की बहुत ही दुःखदाई सचाई है कि उन शक लोगों ने उस ईरान के राजा को मारा। राजधानी को लूटा-खसोटा, स्त्री-पुरुषों का नाश किया, कुएं भर गये लोथों से और उस राजा को मारकर उसकी खोपड़ी में उसी का खून डालकर पीया। ऐसे बर्बर लोग भारत पर आक्रमण करने आये। एक शक राजा जब कश्मीर की ओर से नीचे उतर रहा था तो जम्मू से कश्मीर जाते हुए रास्ते में पीर पंजाल की पहाड़ियाँ हैं। वहाँ वैष्णवदेवी से

पहाड़ियाँ दिखती हैं। फिर पन्हिल दर्रा है, पास है। फिर टर्मिनल बनाई गई है। उस टर्मिनल से बस जाती है। उन पहाड़ियों से जब मिहिरकुल नाम का शक राजा उतर रहा था तो उसने जिंदगी में पहली बार एक हाथी को देखा। हाथी होता ही नहीं उनके देश में। हाथी को देखा तो हाथी का पांव अचानक पहाड़ी से फिसल गया। पांव फिसल जाने से हाथी नीचे गिरा। हाथी ऐसे गिरा कि दो तिरछी पहाड़ियों के ढलान के भीतर गिरा और नीचे जाकर पहाड़ियाँ इतनी संकरी हो गयी थी। जिनके भीतर वह पीठ के बल गिरा। हजार प्रयास करने के बाद भी वह अपने शरीर को सीधा नहीं कर सका। सीधा हुए बिना वह खड़ा नहीं हो सकता। पीठ के बल गिरा और नीचे बहुत संकरी जगह थी जिससे वह उठ नहीं सकता था। उस अवस्था में वह—सूंड मार रहा था। पूंछ मार रहा था। चारों पांव छटपटा रहा था। उठने की कोशिश कर रहा था, चिंघाड़ रहा था। मिहिरकुल को यह देखकर बड़ा आनंद आया। वाह! ऐसा मृत्यु संगीत मैंने जीवन में कहीं नहीं सुना। कई दिन तक वह हाथी रोता रहा, चिंघाड़ता रहा और अंत में हाथी की बड़ी दुःखदायी मृत्यु हो गई। उस शक राजा मिहिरकुल को यह दृश्य बड़ा रोचक लगा। उसने बाद में वहाँ से उतर कर आगे विजय करते हुए....विजय करते हुए क्या? बस्तियों को घेर लेना, चारों ओर आग लगा देना। भागने वालों को बर्छों से, भालों से मारना। स्त्री-पुरुषों की बड़ी दुर्गति करना, और बहुत भयंकर प्रकार के पापाचार करना। यही उसका तरीका था। तो जब वह नीचे उतर रहा था तो बस्तियों को लूटता-खसोटता मथुरा तक आकर उसने नाश किया और बहुत उजाड़ दिया सारे देश को। तब उसने एक सौ हाथी अपने विजय किये हुए क्षेत्र में से ले जाकर उस पहाड़ी की उसी जगह पर जाकर बारी-बारी से उनको गिराया और एक-एक हाथी को गिराने और 5-5, 6-6 दिन तक उनका मृत्यु संगीत सुनने में उसको वर्ष लग गया। वह वहाँ बैठा हुआ उनका मृत्यु संगीत सुनता रहा। उनकी मृत्यु की चिंघाड़ सुनकर आनंदित होने वाले, दूसरों को दुःख देकर, दूसरों को सताकर आनंद मनाने वाले ऐसे नर-पिशाच, शरीर तो मनुष्य का है पर प्रकृति पिशाच की है। दूसरों को सताना, दूसरों को तड़पाना और उसमें सुख मानना। ऐसे शक लोग बढ़ते-बढ़ते पहुँच गये उज्जैनी नगर के पास। अवन्तिका के पास। वहाँ पर एक मालव गणराज्य था। आज से हम 2035 साल पहले की बात कर रहे हैं। उससे दो सौ साल पहले जब सिकंदर ने भारत पर आक्रमण किया था तो वह मालव गणराज्य पंजाब में था। आप जयशंकर प्रसाद का नाटक पढ़ें—चन्द्रगुप्त। उसमें आपको संकेत मिलेगा। इतिहास के ग्रंथ देखें उनमें आपको संकेत मिलेगा मालव गणराज्य का। अभी पंजाब के दो भाग हैं—माझा और मालवा। मालव वहाँ थे। उन्होंने सिकंदर की सेनाओं की खूब दुर्गति की थी, ऐसी मार दी थी कि सिकंदर परेशान हो गया था। भाग गया था। इसलिये वे मालव लोग, वह सारा का सारा जो पेप्सु का इलाका है वह मालवा

का इलाका है। अमृतसर से उधर माझा, अमृतसर से इधर मालवा और ये मालवे के वीर बड़े बहादुर थे। इनके नाम पर पंजाब में कई नगर अभी भी हैं। एक है मालेर-कोटला। मालेर कोटला का नाम था मालवेर-कोटला। मालव लोगों का किला। एक है मनोद, उसका नाम था मानवोदय। इस तरह से मालवों का यश यहाँ भी था। उसके बाद किसी ऐतिहासिक उथल-पुथल से बढ़ते-बढ़ते चले गये मध्यप्रदेश की तरफ और जाकर उज्जैन के आस-पास बस गये थे। आज से 2035 वर्ष पहले जब शकों का हमला हुआ तब मालव गणराज्य वहाँ था। वहाँ उज्जैन के पास वह गणराज्य था। गणराज्य यानी गणतंत्र और उस गणतंत्र का अध्यक्ष था वीर विक्रमादित्य मालव गणाधिपति। मालवगण का अधिपति। लोगों ने सम्मान से उसको राजा विक्रमादित्य लिखना शुरू किया। लेकिन वो वास्तव में मालव गणाधिपति था। जैसे भगवान कृष्ण ने कभी राज्य नहीं किया। पर सब लोग आदर से कृष्ण महाराज, कृष्ण महाराज कहते ही हैं। उन्होंने राज्य ही नहीं किया तो महाराज का प्रश्न ही क्या? वह क्या थे? वृष्णि गणराज्य था द्वारिका में। भगवान श्री कृष्ण उस वृष्णि गणराज्य के अध्यक्ष थे। इसलिये गणराज्य था। इस तरह से बुद्ध के पिता को राजा शुद्धोधन, शुद्धोधन राजा नहीं था। वहाँ पर एक गणराज्य था। उस गणराज्य का अध्यक्ष था। इसलिये भारत के प्राचीनकाल में गणराज्य थे और मालव गणराज्य का अध्यक्ष था विक्रमादित्य, वीर पुरुष। वह गया महाकाल के मंदिर में। उस नर केसरी विक्रमादित्य ने महाकाल के मंदिर में जाकर और अपनी खड्ग निकाल करके अपनी भुजा का रक्त शंकर भगवान् को चढ़ा करके प्रतिज्ञा की—शंकर भगवान्! लोग आपका जलाभिषेक करते हैं मैं आपका रक्ताभिषेक कर रहा हूँ इस प्रतिज्ञा के साथ कि अपने शरीर की अंतिम रक्त बूंद भी इस राष्ट्र पर आयी हुई विपदा को निरस्त करने में लगा दूंगा और जब तक इन शकों को इस देश से खदेड़कर बाहर नहीं फेंक दूंगा तब तक मेरी अपराजित खड्ग पुनः म्यान में नहीं जायेगी। यह प्रतिज्ञा करके वह नरवीर निकला। देश के लिये प्राणोत्सर्ग करने के लिये वीरों की टोलियाँ जमायी और इन बर्बर शकों को, नर-पिशाचों को खदेड़ना शुरू किया और इनको खदेड़ते-खदेड़ते इसने हिन्दूकुश के पार फेंक दिया। जिसको हम लोग सिंधुद्वार कहते थे उसको मुसलमानों ने अपने आक्रमण के बाद दर्रा खैबर कहना शुरू किया। दर्रा खैबर नाम का एक नगर अरब में है। आपको लज्जा आनी चाहिये अरब के नगर के नाम पर उसको दर्रा खैबर नाम दे दिया। उसका नाम सिंधुद्वार था। उसके पार खदेड़ दिया और अफगानिस्तान में, काबुल में अंगूर की बेलों के निकुंजों में जाकर उसकी सेनाओं ने विश्राम किया। उसने कहा, हमने पश्चिमोत्तर की सीमा को विजित कर लिया है। अब पूर्व की ओर हम लोग बढ़ेंगे। पूर्व की ओर आराकान, बर्मा तक जाकर उसने विजय किया।

सच्चे अर्थ में देश स्वाधीन तब होगा जब देश का बच्चा-बच्चा ऋणमुक्त हो जाय चाहे मेरी प्रजा में से किसी को किसी का ऋण देना हो, एक पैसा भी जिसको चुकता करना हो। जो जिसका ऋणी होता है उसकी आंखें सदा साहूकार के सामने झुक जाती है। वह गुलाम रहता है। चाहे किसी विदेशी का राज्य न हो, लेकिन उसके ऊपर किसी का, उसके ऊपर धन का राज्य बना हुआ है इसलिये वह उसका गुलाम है, उसके सामने झुकता है। विक्रमादित्य ने कहा, मेरी प्रजा में कोई भी किसी का ऋणी नहीं रहेगा। जिसको जितना ऋण देना हो आकर के हमारे दरबार में बताओ, हमारे कार्यालयों में बताओ, राजकोष से सबका ऋण चुकता कर दिया जायगा। सम्राट् विक्रमादित्य ने राज्यकोष से बच्चे-बच्चे का, व्यक्ति-व्यक्ति का ऋण चुका दिया। उसने कहा, अब सच्चे अर्थ में मेरी प्रजा भयमुक्त है, ऋणमुक्त है, आपदामुक्त है। अब मैं इस परम पवित्र नववर्ष प्रतिपदा के दिन संवत् संस्थापित करता हूँ। लोगों ने कहा, इसका नाम विक्रम संवत् रखो। उसने कहा, नहीं!

विक्रम संवत् मत रखो! मैं कौन हूँ? मैं तो एक गणराज्य का अध्यक्ष हूँ। इस संवत् का नाम कृतसंवत् है। विक्रमादित्य ने अपने समय में इसका नाम विक्रम संवत् नहीं रखा। उसने कृतसंवत् नाम रखा। कृत माने सत्ययुग का समय। इस देश में पुनः सत्ययुग आ गया है। सत्ययुग कैसे आता है? तैत्तिरीय ब्राह्मण में कहा— कलि शयानो भवति। सोये हुए व्यक्ति के लिये कलियुग आया है, जो जम्हाई ले रहा है उसके लिये द्वापर और उत्तिष्ठत् त्रेता भवति जब खड़ा हो जाता है उसके लिये त्रैतायुग आ जाता है। जब आदमी चलने लगता है। तो उसका नाम सत्ययुग हो जाता है। जो राष्ट्र सोया हुआ है वह कलियुग में है। जो राष्ट्र जम्हाई ले रहा है वह द्वापर में है। जो राष्ट्र उठ करके खड़ा हो गया है वह त्रेता में है। जो राष्ट्र वेग से चलने लगा है गतिमान हो गया है वह राष्ट्र सत्ययुग में है। इसलिये उसने कहा, इन पापी-नराधम शकों को निरस्त करने के लिये पूरा राज्य खड़ा होकर वेग से बढ़ा है। शत्रु को खदेड़ करके बाहर फेंक दिया है इसलिये यह सत्ययुग है। इसलिये कृतसंवत् नाम रखा। कृतसंवत् नाम चला। कुछ अवधि पश्चात् लोगों ने उसको परिचय करने के लिये लगभग तीसरी-चौथी शताब्दी में इसका नाम रख दिया गया मालव गण संवत्। क्योंकि मालव गणराज्य का संवत् था। इसलिये मालव गण संवत्। और ८-९वीं शताब्दी में यशोधर्मा ने जब पुनः हूणों को परास्त किया। उसने प्राचीन संवत् को लोगों को परिचय देने के लिये कहा—विक्रम संवत्। इसको सम्राट् विक्रमादित्य ने संस्थापित किया, इसलिये विक्रम संवत् और विक्रमादित्य ने अपने समय में यह नाम नहीं रखा। बाद के लोगों ने श्रद्धा से उसको नाम दिया विक्रम संवत्। क्योंकि विक्रमादित्य ने अत्यंत विनम्रता से कहा कि यह मेरा पुरुषार्थ नहीं है पूरे राष्ट्र का पुरुषार्थ है। मैं राष्ट्र का प्रतिनिधि हूँ। मैं इस गणतंत्र का एक प्रतिनिधि-मात्र हूँ।

आज के दिन विक्रमादित्य ने नव-संवत्सर स्थापित किया। सच्चे अर्थ में वैभव का युग कैसा होना चाहिए? इसकी कल्पना मिलती है इस विक्रमादित्य के संवत्सर से। वह इतने से संतुष्ट नहीं हो गया था।

वह रात को वेष बदल करके निकलता था और गुप्त रूप में जाकर देखता था कि मेरे राज्य में कोई दुःखी तो नहीं है। किसी की कुटिया से रोने की आवाज तो नहीं आती। किसी के घर में बच्चे बिना दूध पीये सो तो नहीं गये हैं। बच्चे बिलखते तो नहीं हैं अन्न के बिना। वह घूमता था। एक कुटिया से एक बुढ़िया के रोने की आवाज आ रही थी। विक्रमादित्य ने पूछा, माँ! क्या बात है? तू क्यों रो रही है रात्रि के अंधेरे में। बुढ़िया ने कहा, मेरा एक नौजवान बेटा विक्रमादित्य की सेना में भरती हुआ था। वह लड़ने के लिये पश्चिमोत्तर की तरफ गया था। दस वर्ष हो गये। मेरा नौजवान बेटा लौटा नहीं है। उसी के वियोग में रो रही हूँ। मेरी आंखों पर मोतिया छा गया है। मैं देख नहीं सकती हूँ ठीक से। पर उस बच्चे के सिवा मेरा कोई सहारा नहीं था। इसलिये उसके वियोग में रोती हूँ। विक्रमादित्य ने उसके चरणों को पकड़ करके माथा उसके चरणों में रख दिया। कहा, माँ! तू भूल गयी। तू पहचानती नहीं है। मैं ही तो तेरा बेटा हूँ। मैं लड़ने के लिये गया था विक्रमादित्य की सेना में। हम विजयी होकर लौट करके आये हैं माँ। बताओ, मेरे लायक क्या सेवा है? माँ ने टटोल करके देखा। माँ ने कहा, नहीं बेटा! तू मेरा बेटा नहीं है। मेरा बेटा थोड़े हलके शरीर का था। तेरा डील-डौल कुछ बड़ा है। माँ! दस वर्ष हो गये। दस वर्ष में क्या डील-डौल बड़ा नहीं होता है। हम लोग खूब बहादुरी से लड़े। हम विजयी हुए। मैं तेरा बेटा हूँ और न मानते हुए भी रातभर माँ की सेवा करता रहा। उसने सुबह उठकर कहा—माँ! मेरे को राज दरबार में कुछ काम है। शाम को मैं फिर आ जाऊंगा। चला गया। शाम को फिर आ गया। उसकी सेवा करता रहा। पाँच-सात रोज के बाद उस बुढ़िया को संकेत मिल गया। यह जो मेरी सेवा करने आता है यह तो मालव गणाधिपति, सम्राट् विक्रमादित्य है। तब तो रात को विक्रमादित्य के आने पर अपने हृदय से विक्रमादित्य को खूब आशीर्वाद दिया। दोनों आंखों में गंगा-जमुना की धार बहाती हुई उस माँ ने कहा कि, ऐ विक्रम! तेरे जैसा पुरुषार्थी, तेरे जैसा वीर, तेरे जैसा प्रतापी राजा, सारे भारत का स्वामी होकर भी मेरे जैसी एक निर्धन बुढ़िया की सेवा करने के लिये मेरे पास आता है। ऐ बेटा! तू मेरा बेटा बन करके आया है, मैं आशीर्वाद देती हूँ, जब तक चन्द्र-सूर्य-तारागण रहेंगे तेरा यश संसार में अमर रहेगा। बच्चा-बच्चा तेरे यश का तराना गायेगा। ऐ बेटा! तेरे यश को कोई मिटा नहीं सकेगा। उस बुढ़िया के आशीर्वाद में मानो साक्षात् भारतमाता का आशीर्वाद था और आज सचमुच पानी भरने वाली पनिहारिनें, भैंसें, भेड़-बकरी चराने वाले चरवाहे, खेतों में काम

करने वाले किसान, घरों में रहने वाले, नगरों में, वनों में रहने वाले सब लोगों की जिह्वा पर विक्रमादित्य का नाम है। बच्चा माँ से कहता है, दादी से कहता है मुझे विक्रमादित्य की कहानी सुनाओ। विक्रमादित्य का सिंहासन देश के करोड़ों-करोड़ों लोगों के हृदयों में पिछले 2035 वर्षों से स्थापित हो चुका है। उस सिंहासन को कोई लूट नहीं सकता।

वह विक्रमादित्य एक बार रात्रि को घोड़े पर जा रहा था प्रजा का हाल जानने। एक खेत के भीतर से गया। खेत की रखवाली के लिये दो-चार लोग बैठे थे। उन्होंने कहा, ऐ! किधर जाता है? क्यों क्या बात है? अंधा है दिखता नहीं है। हल चलाया हुआ खेत है। बीज बोया हुआ है उसके भीतर से घोड़ा दौड़ाकर ले जा रहा है? उसने कहा, भूल हुई। भूल क्या हुई! गाँव का नियम है जो जोते हुए खेत के भीतर से चलेगा, घोड़ा दौड़ायेगा उसको पचास कोड़ा दण्ड मिलेगा। विक्रमादित्य घोड़े से उतरा और अपनी पीठ नंगी कर दी। पचास कोड़े खा लिये। यह था न्यायप्रिय विक्रमादित्य। जो सदा न्याय को नमस्कार करता है। मेरी प्रजा ने कुछ नियम बनाये है। मेरे सम्राट् होने का मतलब यह नहीं है कि मैं जो मरजी धांधली करता रहूँ, मैं जो मरजी अपराध करता रहूँ और कोई बोले तो उसको उठाकर मीसा में बंद कर दूं। डी. आई. आर. में बंद कर दूं, सीखचों में डाल दूं और देश के ऊपर इमरजेंसी लागू कर दूं। न्याय का सम्मान करने वाला वह विक्रमादित्य था, उसकी हजारों ऐसी गाथाएं आप सब जानते हैं।

आपने उसके न्याय की वह कथा अवश्य सुनी होगी। उसके दरबार में स्त्रियाँ एक बच्चे पर झगड़ा करती हुई आयीं। एक ने कहा, बच्चा मेरा है, दूसरी ने कहा—बच्चा मेरा है। बच्चा एक स्त्री का था। दूसरी कुलटा जो थी उसने क्या किया? उसका अपना बच्चा था नहीं। उसने इसका बच्चा छीन लिया था ताकि वह निपूती हो जाय और खुद इस बच्चे के साथ मनमानी करे। तो विक्रमादित्य के दरबार में यह मामला आया। दोनों अपना-अपना पक्ष कहने लगीं—बच्चा मेरा है, मेरा है। विक्रमादित्य का अनोखा न्याय था। विक्रमादित्य ने कहा, दोनों ही बच्चे को अपना कहती हैं। तो विक्रमादित्य ने मंत्री को कहा, उठो, दोनों को तलवार से आधा-आधा काट करके बांट दो। तलवार उठाकर दो टुकड़े कर दो और दोनों को बांट दो। दोनों ही तो अपना कहती हैं! ज्योंही तलवार उठाना था कि जो सच्ची माँ थी वह हाहाकार कर उठी, ईश्वर के वास्ते ऐसा मत करो। मेरी आंखों के सामने मेरे कलेजे के टुकड़े को मत काटो। बेशक किसी दूसरे को दे दो लेकिन काटो मत। दूसरी जो कुलटा थी वह मन ही मन बड़ी प्रसन्न हो रही थी। विक्रमादित्य तुरंत समझ गये। यह तो उनकी परीक्षा थी। न्याय का ढंग था उनका। उन्होंने बच्चे को माँ को दिया और दूसरी को खूब दण्डित किया।

विक्रमादित्य के सिंहासन की कथा आपने सुनी होगी। प. पू. डॉ. जी का शरीर शांत होने के बाद प. पू. गुरुजी ने सरसंघचालक का पद का दायित्व लिया। उन्होंने उसी विक्रमादित्य की कथा को सुनाया। प्रथम भाषण में ही। विक्रमादित्य का सिंहासन एक टीले में दबा हुआ था। उस गाँव में लोगों को कुछ भी न्याय करवाना होता था तो न्याय ठीक से नहीं होता था। एक चरवाहे का लड़का था। लोग उसको कहते थे। वह उस टीले पर बैठकर जो न्याय करता था वह सबको स्वीकार होता था। बिल्कुल शुद्ध न्याय करता था टीले पर बैठ करके। तो उस टीले पर बैठकर न्याय करने से उसका न्याय ठीक होता था। वैसे कुछ न्याय करता तो न्याय गलत होता। बाद में खुदाई में देखा गया उस टीले के नीचे विक्रमादित्य का सिंहासन दबा हुआ था। हजारों वर्षों के बाद जो सिंहासन दब गया था, उस पर टीला बन गया था उस टीले पर बैठने वाला गडरिये का बच्चा भी न्याय ही करता था। प. पू. गुरुजी ने सरसंघचालक का पद संभालते समय कहा कि गडरिये का बच्चा भी विक्रमादित्य के सिंहासन पर बैठकर, उस टीले पर बैठकर न्याय ही करता है। उन्होंने कहा—मैं तो संघ के सरसंघचालक पद के योग्य नहीं हूँ लेकिन जैसे गडरिये का बच्चा भी विक्रमादित्य के सिंहासन पर बैठकर न्याय ही करता है तो विक्रमादित्य के इस पावन, इस विक्रम संवत् के दिन जिनका जन्म हुआ उन प.पू.डॉ.साहब के द्वारा संस्थापित संघ के इस पद को, जो मुझे सौंपा गया है उनके द्वारा प्रतिष्ठित इस पद पर बैठकर शायद मुझ गडरिये के बच्चे से न्याय ही होगा। ऐसा प. पू. गुरुजी ने अपने बारे में कहा है। ऐसा सम्राट् विक्रमादित्य का अलौकिक यश था और वह यश अमर यश है। अरब में, अरबी भाषा में विक्रमादित्य की स्तुति मिलेगी।

एक पुस्तक है, इराक सरकार ने छपवायी है 'सेअरूल ओकुल'। कविता के बाग की सैर। लोगों ने चुनौती दी, अरब को, इराक को, अरब-अरबी भाषावाले देशों को कि आप जितनी कविता, साहित्य अरबी का बताते हैं वह इस्लाम के बाद का बताते हैं। क्या इस्लाम के पहले अरब देश नहीं था। या अरबी कविता नहीं थी। यदि थी तो उसके नमूने कहाँ हैं? इराक सरकार ने सारे संसार से अपील की, जिसके पास पुरानी अरबी कविता के जो नमूने हों, वह हमें देवें। हम उसको बड़े से बड़ा पुरस्कार देवेंगे। अरबी कविता के बहुत से नमूने, जो इस्लाम से पूर्व के थे, नष्ट कर दिये गये इस्लाम के आने के बाद। लेकिन कुछ नमूने इस तरह से बचे थे कि जो वहाँ का काबा शरीफ, मक्का में जो बड़ा मंदिर, काले रंग के पत्थर के देवता, जिसको मक्केश्वर महादेव कहते हैं, वह वास्तव में विशाल शिवलिंग था। अभी भी वह शिवलिंग ही है। उसको काबा कहकर पूजा जाता है। उसके इर्द-गिर्द 360 और मंदिर थे। बीच में बड़ा देवता था और उसमें शिवरात्रि के अवसर पर बहुत बड़ा कवि-सम्मेलन होता था। उस कवि-सम्मेलन में जो सर्वश्रेष्ठ कवितायें होती थी उन

कविताओं को लेदर के स्क्रोल पर, चमड़े की पट्टियों पर, सोने के अक्षरों से खुदाई करके उस मंदिर में टांगा जाता था। वह लेदर स्क्रोल जो है वह बड़ी कीमती वस्तु हो गई। जैसे तिब्बत के थंका, तिब्बत के मंदिरों में टांगने वाले चित्र, बड़ी दुर्लभ चीज हो गई। हजारों रुपयों में एक थंका बिकता है। इस तरह से अरबी के स्क्रोल जो मंदिर में टांगे जाते थे, जिसमें सर्वश्रेष्ठ कविता लिखी जाती थी, सोने के अक्षरों में वह हजारों रुपयों में, कभी-कभी लाखों रुपयों तक में एक-एक बिकता था और वे कुछ लोगों के प्राइवेट कलेक्शन में थे। कुछ लाइब्रेरियों में भी थे। कुछ अध जले आधे नष्ट किए हुए भी थे। उन सबको इकट्ठा करके और इराक सरकार ने एक ग्रंथ का संपादन शुरू किया। उस ग्रंथ के संपादन के समय जब ग्रंथ का संपादन हो रहा था सन् 1963 में मैं यूरोप के प्रवास से लौटते समय इराक में बगदाद गया। उस ग्रंथ का मैंने अवलोकन किया। अबुल हिक्म ने एक कविता में कमाल कर दिया। वह कहते हैं—अल्लाओं के अल्लाह महादेव! जीवन में आदमी ने कितना भी गुनाह किया हो, एक बार सच्चे हृदय से आपकी चरण-शरण में आ जाय तब आप उसके सब गुनाह माफ कर देते हैं। वह कहता है—हे अल्लाओं के अल्लाह महादेव! मैं आपकी चरण-शरण में आता हूँ। मेरे गुनाह माफ करें। फिर कहते हैं—अल्लाओं के अल्लाह महादेव! अगर जीवनभर में मैंने कोई पुण्य कमाया हो, सबाब कमाया हो, तो उससे मेरी एक मनोकामना पूरी कर दो। वह मनोकामना क्या है? वह कहते हैं—हे महादेव! आपने मेरे को धन-जन-परिवार दिया, बड़ी अच्छी नेक संतानें दी, बड़ी लम्बी उम्र दी और बड़ी अच्छी कवित्व शक्ति दी। हे महादेव! मेरा सबकुछ छीन लो, मेरा धन, जन-भवन-परिवार छीन लो, मेरी नेक, आज्ञाकारी संतानें छीन लो, मेरी कवित्व शक्ति छीन लो और मेरी सारी लंबी उम्र छीन लो और मेरा सब कुछ छीनकर इसके बदले मुझे दे दो सिर्फ एक दिन के लिये भारत का वासा। मैं एक दिन भारत में जी सकूं। यह मेरी मांग है। यही मेरी मुराद है। मैं अपनी आंखों से वेद और गीता जैसे दर्शन के देश का दर्शन कर सकूं, राम और कृष्ण के देश का दर्शन कर सकूं, गंगा-यमुना की धूलि को उठाकर अपनी आंखों पर चढ़ा सकूं, मैं जिंदगी निहाल कर जाऊं। इसके सिवा मुझे कुछ नहीं चाहिये। यह कविता मैं नोट करके लाया और मैंने दिल्ली में, बाबू युगलकिशोर बिड़ला, जो बिड़ला बंधुओं में सबसे बड़े थे, उन्होंने एक बार पूछा, कुछ रोचक प्रसंग सुनाइये, तो मैंने उनको यह बताया कि इराक से यह एक चीज मैं लाया हूँ। तो वह सुनते ही उछल पड़े। उनकी आंखों से अश्रुधारा बहने लगी। कहते हैं इस्लाम के पैगम्बर के चाचा भारत में एक दिन जीने के लिये तरसते थे।

भारत की इतनी स्तुति करते थे। उन्होंने कहा, तुरंत इसको एक बड़े संगमरमर की पट्टी पर खुदवाकर के दिल्ली के बिड़ला मंदिर में लगवा दिया जाय। तब से

वह बिड़ला मंदिर में लगी हुई है। ऊपर मूल अरबी में कविता, नीचे नागरी लिपि में कविता और उसके नीचे हिन्दी में अर्थ, नीचे पुस्तक का नाम और पृष्ठ संख्या 8 एक कालम में दी हुई है।

इसी तरह से विक्रमादित्य के बारे में स्तुतियाँ, विक्रमादित्य की स्तुति में कहा—हे विक्रमादित्य! जब हम लोग जाहिल थे, हम लोग अज्ञानी थे। जब हमें कोई अक्ल नहीं थी। मवेशियों की तरह, पशुओं की तरह रहते थे। हमें धर्म-कर्म का ज्ञान नहीं था। जब हमें साहित्य का कोई ज्ञान नहीं था। तब, हे विक्रमादित्य! तू सूर्य की तरह चमकता था हिंद में। तुमने हमारी भलाई के लिये बड़े-बड़े विद्वान् हमारे देश में भेजे थे जिन्होंने हमें गणित सिखाया, ज्योतिष सिखाया। जिन्होंने हमें अदब सिखाया अर्थात् कविता सिखायी। जिन्होंने हमें औषध विज्ञान, दवा-दारू की हिकमत का काम सिखाया। ये सब चीजें हमने हिन्दुस्तान से सीखी हैं। यह आपकी बरकत है आप इतने उदार थे। आपने हम जाहिलों को, हम बिल्कुल गिरे हुए, पशुतुल्य जीवन जीने वालों को आपने इस तरह से उठाकर हमें योग्य बनाया। ये श्रद्धा के फूल अरबी कविता में विक्रमादित्य के प्रति अभी भी मिलते हैं।

इसी तरीके से तिब्बत में विक्रमादित्य की स्तुतियाँ, चीन में विक्रमादित्य की स्तुतियाँ। ईरान में एक पुस्तक है 'अराजीबोजी'। अराजीबोजी क्या है? अराजीबोजी है 'अराज' राजा भोज की कथाएं। उसमें राजा भोज की और विक्रमादित्य की कथाएं हैं। वह पुस्तक इतनी प्रचलित है जो भी हिन्दुस्तान से व्यक्ति जाता है उससे कहते हैं विक्रमादित्य की कथा बताओ। विक्रमादित्य की कहानियाँ बताओ। विक्रमादित्य की कहानी की किताब दो। इतना विक्रमादित्य का यश पूरे एशिया में फैला हुआ। उस विक्रमादित्य का स्मरण आज के पुनीत दिन पर हम करते हैं।

इस आधुनिक काल में, जिस काल में हम जी रहे हैं, उसी विक्रम की परंपरा को, भारत के विक्रम को, भारत के पराक्रम को पुनः जगाने के लिये एक महापुरुष का अवतार इसी विक्रम संवत् को हुआ। वे थे डॉ. हेडगेवारजी। आद्य सरसंघचालक जिनको प्रणाम हमने किया। आप हैरान होंगे कि जिस बालक को अतिशय निर्धनता ने जकड़ रखा था। जिस बालक के नन्ही-अवस्था में (मात्र 6-7 वर्ष की उम्र में) माता-पिता दोनों प्लेग के शिकार होकर एक ही दिन काल-कवलित हो गये। जिस बालक को पालने-पोसने वाला कोई बचा नहीं। जिस बालक को अपने भोजन तक के लिये समस्या थी कि किस तरह अपने जीवन को चलाने के लिये भोजन प्राप्त करे। उस बालक ने अध्यवसाय से, परिश्रम से, ऊंची शिक्षा प्राप्त की। डॉक्टरी की शिक्षा प्राप्त करके भी अत्यंत अभाव में रहा। उस बालक ने डाक्टर बनने के बाद एक पैसा भी अपने लिये नहीं कमाया, उसने सारी योग्यता, सारा जीवन, सारा पुरुषार्थ, सारा कर्तृत्व भारतमाता के चरणों में समर्पित कर दिया।

उस बालक के मन में प्रारंभ से एक बात खटकती थी। ये दुष्ट अंग्रेज सात समुद्र पार से भारत में आये व्यापार करने के लिये और यहाँ शासक बन गये। वे प्रायः कहते थे The British reign in India is the greatest Historical Mockery. इतिहास का सबसे बड़ा मजाक है भारत में ब्रिटिश साम्राज्य। वह कहते थे कैसे? यदि मैं मान लूं हिन्दुस्तान की कोई Firm, रांची की Firm, कोई बोकारो की Firm अमेरीका में व्यापार करने के लिये जाय और वहाँ जाकर साइनबोर्ड लगा ले Indian Trading Co. और कोई कोयले का व्यापार करे, कोई चाय का व्यापार करे, कोई चीनी का व्यापार करे और व्यापार करने वाली कंपनी धीरे-धीरे पूरे अमेरीका पर राज्य करने लग जाय। वे कहते थे, क्या कल्पना की जा सकती है? इतना बड़ा मजाक हो गया है कि ब्रिटिश लोग व्यापार करने के लिये आये और यहाँ शासक बन बैठे। इसलिये उनके मन में बड़ी चुभन होती थी कि ये विदेशी शासन भारत से निरस्त होना चाहिये। उससे पहले के भारत के हजार वर्ष की पराधीनता का काल, ये भी उनके मन को बड़ा कचोटता था। हम सब इतिहास पढ़ते हैं। कल मेरे पास एक इतिहास में एम. ए. पास किया हुआ विद्यार्थी बैठा था। एक दूसरा था Research करने वाला। उससे दो-चार क्षण की बातचीत हुई तो मुझे लगा केवल पुस्तक-ज्ञान है। कुछ तथ्य घोट लिये, कुछ तथ्य रट लिये और परीक्षा भवन में रटी हुई चीजों को कै करके निकाल दिया, परीक्षा भवन में जाकर लिख दिया, मुहर लग गयी बस एम. ए. पास कर लिया। इतिहास से कुछ सीखा नहीं। इतिहास का बच्चा कहता है मैंने इतिहास का पाठ पढ़ लिया। अरे! क्या इतिहास का पाठ पढ़ लिया? What is the Lesson of History? इतिहास का पाठ क्या है? डॉ. हेडगेवार के मन में यही प्रश्न कचोटता रहता था। इतिहास हमें क्या सिखाता है? क्या केवल किताब में पढ़ लेना, उसको उत्तर पुस्तिका में लिख देना, मास्टर पूछे तो रट करके सुना देना, यह क्या इतिहास का पाठ हुआ। इतिहास से हमने कुछ नहीं सीखा। इतिहास कुछ चेतावनियों से भरा हुआ है। इतिहास हमारी भूलों का, इतिहास हमारे किये हुए राष्ट्रीय अपराधों का लेखा-जोखा है। इतिहास हमारी विजय और पराजय की कहानी है। उत्थान-पतन की कहानी है। कब हम ठीक रास्ते थे तो हम विजयी हुए? कब हम गलत रास्ते थे तो हम पराजित हुए? हमें उससे कुछ सीखना, इसलिये उससे कुछ सीखने के पीछे लगे रहते थे। इतिहास हमें क्या सिखाता है? इतिहास ने हमें सिखाया हमारे देश में राष्ट्रीय चरित्र का अभाव था। इसलिये कोई भी व्यक्ति दर्रा खैबर में खड़ा होकर देखता भारत की ओर—यहाँ मौज-मंगल है। जिसको मरजी, लूट लो। हिन्दुस्तान सोया हुआ है, सोये हुए हिन्दुस्तान को लताड़ करके कोई भी निकल जाय।

अत्यंत अफसोस की बात है कि मुहम्मद बिन बख्तियार, जो खुद पहले गुलाम था, बाद में उसकी विजेता बनने की साध हुई, उसने 17 घोड़े लिये, 17

घुड़सवार लिये, 17 तलवारें ली, उनको लेकर चला। नैमिषारण्य का तीर्थ जो गोमती नदी के किनारे पर है वहाँ पर मार-काट मचायी। गोमती नदी का पानी लाल कर दिया। उस तीर्थ का नाम रख दिया यवनपुर जिसको आजकल आप जौनपुर कहते हैं। उसके बाद आगे बढ़ा तो बनारस में मार काट मचायी, गंगा का पानी लाल कर दिया। वहाँ से आया नालन्दा। नालन्दा विश्वविद्यालय में दस हजार स्नातकोत्तर शिक्षा पाने वाले नौजवान पढ़ते थे। एक हजार आचार्य पढ़ाते थे। क्या दस हजार नौजवान 17 को खत्म करने के लिये काफी नहीं थे? पर दुर्भाग्य देश का। हम करोड़ों थे, पर बिखरे थे। अरे हिन्दू! तुमने बिन्दु का जीवन जीया, तुमने सिन्धु का जीवन नहीं जीया। बिन्दु-बिन्दु करके तू बिखरा रहा, तू मार खा गया। ये दर्द कचोटता था डॉ. हेडगेवार के दिल में। तू बिन्दु रहा। तू सिन्धु नहीं बना। नहीं तो कोई कारण नहीं था कि 17 सैनिक आकर 10 हजार स्नातकोत्तर शिक्षा पाने वालों को मार दें। स्नातकोत्तर का मतलब पोस्ट ग्रेजुएट माने बी.ए. के बाद की उपाधि पाने वाला। उच्च विश्वविद्यालय था। वहाँ साधारण शिक्षा नहीं होती थी। स्नातकोत्तर की शिक्षा होती थी। तो दस हजार स्नातकोत्तर शिक्षा पाने वाले नौजवान, जो सब 20 वर्ष से ऊपर की अवस्था के थे, ऐसे नौजवान वहाँ पढ़ते थे। और एक हजार आचार्य थे पर 17 सैनिकों की तलवारें एक साथ पड़ती थी। 17 एक साथ टूट पड़ते थे और हमारे हजारों लोग अलग-अलग बिखर जाते थे। हरेक अपना प्राण लेकर भागता था। विश्वविद्यालय को आग लगा दी। 4-5 महीने तक आग नहीं बुझी। दुनिया का सबसे भरपूर खजाना ज्ञान का, धूलि-धूसरित हो गया। विद्यार्थियों को मारकर बोरों में बंद करके नदी-तालाबों में फैंक दिया गया। आचार्यों की दुर्गति हुई। यह कोई देश का इतिहास है? चुल्लू भर पानी में डूब मरने वाला इतिहास है। ये इतिहास की चेतावनियाँ हैं। हम इतिहास के पृष्ठों पर इसको पढ़ते हैं तो हमारे दिल में कोई जलजला नहीं उठता। हमारे दिल में बेचैनी नहीं उठती। कोई व्यथा नहीं जागती। अरे! तुम्हें लानत, तुम भारत के पुत्र नहीं हो। भारत की यह दुर्गति हो गई! तुम्हें हजारों वर्षों के बाद भी यह दर्द दिल को छूता नहीं है? हेडगेवार के दिल को यह दर्द छूता था। हाय, यह क्यों हुआ? क्यों हुआ ऐसा? हम केवल पढ़ लेते हैं। आज से 2300 साल पहले मेकडोनिया का सिकंदर भारत पर हमला करने आया। सिकंदर का हमला हुआ, हूणों का हमला हुआ, शकों का हमला हुआ। परसियन का हमला हुआ, तुर्क, ततार, मुगल, पठान का हमला हुआ, ईरान, यूनान, फ्रेंच, डच, अंग्रेज का हमला हुआ। ईरान, इराक, चीन, पाकिस्तान का हमला हुआ। सब हमने पढ़े। हम क्या कर रहे हैं? इतिहास के असहाय मूकदर्शक। जैसे हमारा कोई रोल नहीं है। हमें कुछ नहीं करना हैं। हम केवल कहानी पढ़ने वाले आदमी हैं। भारतमाता की छाती में लगते छुरे के घाव गिनने वाले। हम कपूत हैं

सिकंदर का हमला भारतमाता की छाती में एक घाव। मुहम्मद बिन बख्तियार का हमला घाव। मुहम्मद बिन कासिम का हमला घाव। मुहम्मद गौरी का हमला एक घाव। मुहम्मद गजनी का हमला एक घाव। हम घाव गिनने वाले हैं। हमें कुछ करना नहीं है कि यह हमारी माँ है। इसके ऊपर कोई आक्रमण करे तो हमें कुछ करना है, ये कर्तव्यबोध हमारा नष्ट हो गया था। डॉ. साहब ने एक अच्छे डॉक्टर की तरह यह डाइग्नोसिस किया कि क्या कारण था कि भारत, इतना विशाल भारत, इतना महान भारत, इतनी अधिक जनसंख्या वाला भारत, मुट्ठी भर लोगों के सामने लुट गया? दुनिया के हर कमीने देश ने भारतमाता की छाती पर लात मारी, भारत पर लात मारी, हम देखते रहे। कारण क्या था? उन्होंने देखा, राष्ट्रीय चरित्र का अभाव हो गया था। हम लोग व्यक्तिगत जीवन जीने वाले बन गये थे। हमारा बिन्दु का जीवन हो गया था। सिन्धु का जीवन नहीं था। संगठन नहीं था। राष्ट्र की वृत्ति हमारी नष्ट हो गयी थी। हम भी राष्ट्र के हैं, राष्ट्र के पुत्र हैं, राष्ट्र के प्रति हमारा कर्तव्य है—ये चेतना ही लुप्त हो गयी थी। वे इस दिशा में बचपन से ही सोचने लगे थे। इतिहास उनके लिये केवल एक पुस्तक नहीं थी। इतिहास उनके लिये कागज के पन्ने पर काली स्याही से लिखे हुए अक्षरों की माला नहीं थी। इतिहास उनके लिये चेतावनियों से भरी हुई एक बहुत बड़ी, एक क्रान्ति की ज्वाला थी जिससे उन्होंने मन ही मन निश्चय करना शुरू किया कि मैं क्या करूँ? उनके घर से कुछ दूरी पर एक किला था। सीतामढ़ी का किला। उस पर यूनियन जैक फहराता था। अंग्रेज का राज्य था। उनके मन में निश्चय हुआ किसी तरह यूनियन जैक को हटाना चाहिये। नन्हा सा बच्चा यूनियन जैक कैसे हटाये? उनका एक दोस्त था। दोस्त के घर में पढ़ने के बहाने गये और कमरा बंद करके अंदर ही अंदर सुरंग खोदना शुरू किया। सोचा, नीचे ही नीचे सुरंग खोदकर किले तक जायेंगे और झण्डे को हटा देंगे। काम बड़ा असाध्य लगता है कि नन्हे बच्चे अपने छोटे हाथों से कहाँ तक सुरंग खोदेंगे। दूसरी-तीसरी कक्षा में पढ़ने वाला बच्चा और वह सुरंग खोदने जा रहा है। जब एक-आध दिन पूरा अंदर खट-खट होती रही, जमीन खोदी जाती रही, पूरे दिन कमरे से नहीं निकले तो घर के लोगों ने किवाड़ तोड़कर के देखा—अरे! ये सुरंग खोद रहे हैं? कान मरोड़कर बच्चों को हटाया, यह क्या करते हो? लेकिन उसके मन में साध यही थी ये क्यों हुआ? जिसके मन में पीड़ा नहीं होती है माँ के दुःख को देखकर उस लानती व्यक्ति को भारत का पुत्र कहलाने का अधिकार नहीं है। पाँच वर्ष का नन्हा बच्चा स्कूल में पढ़ने गया और रानी विक्टोरिया का षष्टिपूर्ति महोत्सव हो रहा था। साठ वर्ष राज्य करते हुए हो गया। लड्डू बांटे सब बच्चों को। नन्हे से बच्चे ने लड्डू को कूड़े पर फेंक दिया। भाई ने पूछा, क्या आपको लड्डू नहीं मिले? फेंक दिया। क्यों फेंक दिया? कहा कि विदेशी रानी के भारतवर्ष

पर राज्य करने के साठ वर्ष पूरे होने की खुशी हम भारत के पुत्र मनायेंगे? हम भारतमाता के पुत्र होकर विदेशी शासन के शासक की खुशी मनायेंगे? यह नहीं हो सकता। रानी विक्टोरिया के मरने के बाद एडवर्ड के शासन की स्थापना हुई। वह जो गंजा बिना ताज वाला राजा बैठा और उसके राज्यारोहण की खुशी में बड़ी आतिशबाजी हुई। बहुत बच्चों ने कहा, केशव चलो देखने के लिये। केशव ने कहा—नहीं। उन्होंने कहा, बहुत लज्जा की बात है। एक विदेशी राजा सिंहासन पर बैठता है और भारत पर शासन कर रहा है। भारतमाता को गुलाम बनाया हुआ है और इसकी खुशी भारत के बेटे मनायेंगे? हमारी माँ को गुलाम बनाने वाले गुण्डे हैं ये और राज्य पर बैठने की खुशी हम मनायेंगे? ये नहीं हो सकता। इस तरह की एक राष्ट्रीय वृत्ति उनमें थी। इसलिये वे बिल्कुल निर्भीक भाव से चल रहे थे। उन्होंने वंदेमातरम् आंदोलन में भाग लिया। लोकमान्य तिलक ने वंदेमातरम् आंदोलन शुरू किया। वंदेमातरम् आंदोलन क्या था? उसके पहले कांग्रेस के अधिवेशनों में इंग्लैण्ड का राष्ट्रगीत गाया जाता था। इंग्लैण्ड का राष्ट्रीय गीत क्या था? हे परमात्मा! राजा की रक्षा करो। हमारे परम दयालु राजा की रक्षा करो। यह इंग्लैण्ड का राष्ट्रगीत है। कांग्रेस के अधिवेशनों में इसका गान होता था। क्योंकि लार्ड ह्यूम ने कांग्रेस की स्थापना की थी जो खुद अंग्रेज थे। इसलिये इंग्लैण्ड का राष्ट्रगीत गाया जाता था। लोकमान्य तिलक, लाला लाजपतराय, अरविन्द घोष, विपिनचन्द्र पाल गरम दल के नेता थे। उन्होंने कहा, लानत है तुम्हें। चुल्लू भर पानी में डूब मरो। भारत पर शासन करने वाले विदेशी राजा की उम्र लंबी करने के लिये प्रार्थना तुम कर रहे हो? भारत के पुत्र होकर प्रार्थना करते हो, विदेशी राजा की उम्र लंबी हो? नहीं, ये नहीं होगा। बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने उन्हीं दिनों आनंदमठ लिखा था? योगीराज अरविन्द कहते हैं—संसार के इतिहास में किसी उपन्यास, किसी पुस्तक में ऐसा कोई गीत नहीं है, जिस गीत की पंक्तियाँ, पुस्तक के पन्ने पर काले अक्षर से लिखी हुई पंक्तियाँ, पुस्तक के पन्ने से उछलकर करोड़ों लोगों के हृदयों पर लिखी गई हों और लोगों ने उसको अपना राष्ट्रीय गीत बना लिया हो। बंकिमचन्द्र के गीत में वह शक्ति थी। उस पुस्तक के पन्ने से वे पंक्तियाँ उछल पड़ी करोड़ों की जिह्वा पर, करोड़ों के हृदय पर लिखी गयी और उसके लिये लोगों ने बलिदान दिये। प्राण तक दिये। वंदेमातरम् आंदोलन शुरू हो गया। अरविंद घोष ने आह्वान किया। उस समय डॉ. साहब हाई स्कूल की कक्षा में पढ़ते थे। तब उन्होंने अपने स्कूल में इसी आंदोलन का नेतृत्व किया। ब्रिटिश शासन ने कह दिया था—जहाँ वंदेमातरम् बोला जायेगा, वहाँ गोली चलेगी। वंदेमातरम् बोलना अपराध है। भारतवासियों ने कहा—हम भारतमाता की जय बोलेंगे ही बोलेंगे। हमें अपनी माँ की जय बोलने से कोई रोक नहीं सकता है। इसलिये जिधर वंदेमातरम् की टोलियाँ बोलती वंदेमातरम्

उधर तड़-तड़-तड़ करके गोलियाँ चलती थी और लोगों की लाशें गिरती। कोई जख्मी होता तो उधर से दूसरी टोली आती और बोलती—वंदेमातरम्।

स्कूल के प्यारे बच्चो! वह युग था जब स्कूली बच्चों ने वंदेमातरम् के आन्दोलन को जगा दिया था और वंदेमातरम् से सारा आकाश गुंजायमान हो गया था। निर्भीक बच्चे भारत के और आज की आजादी उन्हीं की देन है। **वंदेमातरम् गाकर बलिदान होने वाला खुदीराम बोस, गीता को छाती पर रखकर वंदेमातरम् गाते-गाते प्राण दे रहा है।** यह उन लोगों की देन है। आज स्कूलों में जाकर पूछते हैं बच्चों को वंदेमातरम् याद है? नहीं जी, ये तो कराया नहीं जाता। उनकी पहली पीढ़ी के बच्चों ने वंदेमातरम् के लिये प्राण दिये और आज का विद्यार्थी वंदेमातरम् बोलने का कष्ट नहीं कर सकता। वंदेमातरम् की चार पंक्तियाँ याद करने की उसके पास फुरसत नहीं है। इसलिये हमें संभलने की जरूरत है। उस वंदेमातरम् आंदोलन में डॉ. हेडगेवार ने ऐसी योजना की। एक मुसलमान स्कूल इंस्पेक्टर था। स्कूल में आने वाला था। स्कूल में एक बहुत बड़ा परिपत्र आया हुआ था। किसी भी विद्यालय में वंदेमातरम् गाने की अनुमति नहीं है। गाने वालों को कठोर दण्ड मिलेगा। जिस विद्यालय में गाया जायेगा वहाँ के हेडमास्टर, प्राचार्य आदि को दण्ड मिलेगा। तो केशव बलिराम हेडगेवार ने निश्चय किया कि जिस भी कक्षा में वह जायेगा सब लोग वंदेमातरम् गायेंगे। तो सब कक्षाओं में बोर्ड पर लिखा हुआ था वंदेमातरम्। और वह कक्षा में गया, सब लोग खड़े हो गये और कहा, वंदेमातरम्। वह बड़ा हैरान। हमने कल ही तो एक सर्कुलर भेजा है कि यह गाना अपराध है। गाने वालों को दण्ड मिलेगा। वह झुंझलाकर दूसरी कक्षा में गया। वहाँ भी सब खड़े होकर बोले, वंदेमातरम्। तीसरी कक्षा में, जहाँ जाये सुनाई दे—वंदेमातरम्। वह बड़ा परेशान हुआ। उसने तुरंत रिपोर्ट की। इस स्कूल में बहुत भयानक काम हो रहा है। वंदेमातरम् हो रहा है। विद्रोही लोग यहाँ भरे हुए हैं। स्कूल के हेडमास्टर पर बहुत नाराज हुआ। हेडमास्टर विद्यार्थियों पर नाराज हुआ। विद्यालय बंद कर दिया गया। कोई नाम न बतावे केशव का, अंत में बहुत मुश्किल से उनका नाम पता लगा तो बाद में उनको स्कूल से निकाल दिया गया। निकल गये, कोई चिंता नहीं की। यवतमाल में जो पहले बिहार के गवर्नर रह चुके थे उनका यवतमाल में एक राष्ट्रीय विद्यालय था। वहाँ भर्ती किये गये। तो वहाँ गये। वे चाचा के साथ सुबह-सुबह सैर करने को जा रहे थे। डिप्टी कमिश्नर सामने से आ रहा था। डिप्टी कमिश्नर आराम से टहलते-टहलते आ रहा था। वहाँ नियम यह था कि अंग्रेज अफसर कोई सामने से आये तो उसके लिये रास्ता छोड़ देते थे, रोड उसके लिये छोड़ देते, रोड के एक किनारे खड़े होकर उसको प्रणाम करते थे। चाचा ने देखा, अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर आ रहा है तो सड़क से हट जाना चाहिये। पर क्यों? भारत की सड़क है, भारत के

हम पुत्र हैं। अंग्रेज तो विदेशी है इसको हम प्रणाम करें? ये तो भारत का अन्न-जल खा रहा है, ये हमको प्रणाम करे। हम क्यों इसको प्रणाम करें? चाचा बड़े हैरान हुए। वही स्थिति हुई जब अंग्रेज अफसर सामने आ गया, तो केशव खूब अच्छी तरह से अकड़कर उसके सामने से जाने लगा। उसको लगा, बड़ा गुस्ताख लड़का है। उसने अपने एक कर्मचारी को कहा, इस बच्चे को बुलाओ। बुलाया। ये कौन साहब हैं? केशव ने कहा, मुझे जानने की जरूरत क्या है? यहाँ के डिप्टी कमिश्नर साहब हैं। होते होंगे। यहाँ की मर्यादा यह है कि लोग सड़क छोड़कर हट जाते हैं, प्रणाम करते हैं। उन्होंने कहा, नहीं! ये कोई मर्यादा नहीं है। ये देश मेरा है। मैं अपने देश में चल रहा हूँ। मैं एक विदेशी को प्रणाम क्यों करूं? चाचा ने कहा, दूसरे लोगों ने कहा, ऐसा नहीं करते। नहीं, केशव ने कहा—'केशव किसी को भीति नमस्कार नहीं करता। भय से नमस्कार नहीं किया जायेगा। कुछ लोग भय से नमस्कार करते हैं, डर से नमस्कार करते हैं। भय का नमस्कार, नमस्कार नहीं है। कई लोग रीति नमस्कार करते हैं। रीति बनी हुई है। किसी ने कहा, राम-रामजी। राम-राम। ये वास्तव में नमस्कार नहीं है। कोई छोटा-बड़ा आदमी आ रहा है उसको कहा, प्रणाम। प्रणाम। यह रीति नमस्कार है। रीति निभाने के लिये नमस्कार करते हैं। कोई करते हैं नीति नमस्कार। अच्छा देखो। काम निकालना है न? तुम यहाँ ठहरो। मैं जाता हूँ। और, अफसर के पास गया और कसकर सैल्यूट मारा। ओ साहब! क्या कहें? आपके दर्शन नहीं होते हैं। हम तो आपके लिये तरसते रहते हैं। आप कभी-कभी दर्शन दिया करें। खूब प्रशंसा की, उसकी प्रशंसा के पुल-बांधे। उसको प्रणाम आदि किया, आवश्यकता हुई तो उसके पांव छू लिये। काम निकालने के बाद, उनके दस्तखत चाहिये उनके दस्तखत करा लिये और बाहर आकर कहा—देखा, हमने कैसे इसको गधा बनाया। जिसको प्रणाम किया उसको गधा बनाया। यह नीति का, कूटनीति का नमस्कार हुआ। यह नीति नमस्कार है। वास्तविक नमस्कार है—प्रीति नमस्कार। जिससे हमारा प्रेम है उसको नमस्कार करेंगे। भय से नमस्कार नहीं करेंगे। केवल रीति निभाने के लिये नमस्कार नहीं करेंगे, केवल नीति नमस्कार नहीं करेंगे। हम केवल प्रीति-नमस्कार करेंगे, और प्रीति नमस्कार होगा हमारा मातृभूमि के प्रति। नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमि, हे सदा वत्सला मातृभूमि, तुम्हें नमस्कार। मातृभूमि को नमस्कार। ऐसे अलौकिक महापुरुष की जीवन गाथा गाते-गाते रात्रि से प्रभात हो जायेगी। इसलिये मैं कहाँ तक गाऊँ? जब कलकत्ता गये। वहाँ क्रान्तिकारियों का संग हुआ। और क्रान्तिकारियों के साथ रहकर अरविन्दजी के संपर्क में आये। भारतमाता की उपासना का व्रत उन्होंने लिया। अनुशीलन समिति में रहे। वहाँ से लौटकर फिर नागपुर आये तो फिर क्रान्तिकारियों का एक Golden Triangle था दिल्ली-कलकत्ता-मुंबई। इस Golden Triangle में क्रान्तिकारियों को बम सप्लाई करने में, हथियार सप्लाई करने में भी भाग लेते रहे। पंजाब में भगतसिंह, राजगुरु,

सुखदेव इत्यादि इनके संपर्क में आते थे। राजगुरु तो खुद नागपुर का स्वयंसेवक था। वहाँ बम फेंकने के बाद जब लौटकर आया राजगुरु, तो डॉ. साहब ने भैयाजी दाणी की Firm में रखवाया, डॉ. साहब ने उससे कहा—देखो, पूना मत जाना। पूना जाओगे तो संकट आ जायेगा। एक बार गलती से राजगुरु पूना चला गया, वह वहाँ पकड़ा गया और उसको बाद में फांसी हुई। भगतसिंह भी इनके संपर्क में आता था। डॉ. साहब क्रान्तिकारियों को बम सप्लाई का काम करते थे। इसके लिये परीक्षण किया। लोगों को जंगल में ले जाते थे और अनेक प्रकार से टेस्ट लेते थे, परीक्षा लेते थे। ऐसे लोग उन्होंने खोजे जो नौजवान औरत का रूप धारण कर सके, औरत के वस्त्र पहन सके। जिसकी मूंछ-दाढ़ी नहीं आयी हो। आयी हो तो उसकी सफाई करके और वह कंचुकी पहनकर के अपनी छाती में दो बम रखकर यानी स्तनों की जगह बम रखकर के ऊपर कंचुकी पहनकर, ऊपर साड़ी पहनकर Travel करे और वह क्रान्तिकारियों को बम सप्लाई करे। ऐसे नौजवान खोजे जो कलकत्ता से लेकर नागपुर तक, नागपुर से मुंबई तक, मुंबई से पंजाब तक, पंजाब से पूना, नागपुर तक इस Triangle में घूमते थे। ये अद्‌भुत कार्य करते रहे। एक बार तो नागपुर के अंदर पूरी ट्रेन के ऊपर डाका डालने की एक योजना बनायी गयी थी। प्रातःकाल पुलिस की वर्दियाँ बनाई गई। चपरासी की वर्दियाँ बनाई गई, कुलियों की वर्दियाँ बनाई गई। कई-कई संघ के अधिकारियों को कुली बनाया गया। वे कुली बने। वे स्पेशल कुली बन गये, स्पेशल पुलिस अफसर बन गये, तांगा लेकर गये। देखो, हमारी गाड़ी आ रही है। अरे ओ कुली! देखो, यह बक्सा उठाओ। सब पुलिस अफसर बने हुए, फीते आदि लगाये हुए, बक्से को उठाकर तांगे पर चढ़ा दिया, तांगे से ले भी गये और सरकार खोजती रह गयी। डॉ. साहब की एक भी योजना सरकार कभी नहीं पकड़ सकी। ऐसे कुशल कार्यकर्ता थे। इतने बड़े क्रान्तिकारी। उनकी एक योजना को भी सरकार विफल नहीं कर सकी। यह उनकी महानता थी।

ये सारे अनुभव लेने के बाद वे कांग्रेस में गये, मालवीयजी के साथ रहे, गाँधीजी को निकट से देखा, अरविन्दजी के साथ रहे, तिलक के भक्त रहे, सावरकरजी को कई बार शाखाओं में बुलाया। बहुत ही अद्‌भुत कार्य करने के बाद उन्होंने सन् 1925 के बाद सारे अनुभवों के बाद निश्चय किया—देखिये, ये सारे बाकी सब काम जो हैं, ये केवल वृक्षों के पत्तों को सींचने वाले काम हैं। राष्ट्र का वास्तविक निर्माण तब होगा जब राष्ट्र को शुद्ध राष्ट्रीय चरित्र की शिक्षा देंगे। उस राष्ट्रीय चरित्र की शिक्षा के लिये नवयुवकों का, किशोरों का, तरुणों का और प्रौढ़ों का दैनिक शाखा में आकर कार्यक्रमों में भाग लेना और प्रतिदिन हृदय पर हाथ रखकर मातृभूमि की वंदना करना। पतत्वेष कायो नमस्ते-नमस्ते हे मातृभूमि! तेरे लिये मेरा शरीर बलिदान हो जाय। मैं हृदय पर हाथ रखकर प्रतिज्ञा करता हूँ। ये संस्कार जब प्रतिदिन मिलेगा, तब

राष्ट्र जाग सकेगा। इस प्रकार म्रियमाण राष्ट्र को, सोये हुए राष्ट्र को, 1300 वर्ष की मार खाये हुए राष्ट्र को, पुनः जीवमान करने, जीवन्त करने, प्राणवंत करने, उसको अपने पांव पर खड़ा करने, उसको संगठन का मंत्र देने और भविष्यत् की उज्ज्वल आशा देने का महान् कार्य इस दधीचि ने किया जिसने अपनी अस्थियों को राष्ट्र के लिये बलिदान कर दिया। अपना सर्वस्व होम कर दिया, राष्ट्र के लिये। मैं मरूं पर मेरा राष्ट्र जी जाय। इसलिये संघ उनका सबसे बड़ा स्मारक है। संघ उनकी सबसे बड़ी देन है। संघ के द्वारा जो राष्ट्रीय चरित्र संपन्न नवयुवक हैं वही देश की और भविष्यत् की सबसे बड़ी आशा हैं। तो आज इस पुनीत पर्व पर मालव गणाधिपति वीर विक्रमादित्य का पावन स्मरण करते हैं, उसके प्रति श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं तो आधुनिक काल में पुनः भारत के विगत वैभव को, पुनः भारत के विगत पराक्रम को, विगत पुरुषार्थ को पुनः जगाने का अभिनव कृत्य करने वाले नये विक्रमादित्य, विक्रम संवत् पर आने वाले डॉ. हेडगेवार को भी अनंत नमन समर्पित करते हैं। आज का यह पुनीत दिन, जिसको दक्षिण भारत के लोग युगादि कहते हैं, युग का आदि है। जिस दिन अनेक महत्त्वपूर्ण घटनायें घटी हैं और अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओं का जो प्रारम्भिक दिवस है, ऐसे इस वर्ष के प्रथम प्रभात पर और इस सृष्टि के प्रथम प्रभात पर और इस विजय के पर्व पर और महान् ऐतिहासिक उद्वेलन के ऐतिहासिक जागरण के इस पर्व पर हम यह संकल्प करें कि हम केवल बिन्दु का जीवन नहीं जीयेंगे, हम सिन्धु का जीवन जीयेंगे। जो गंगोत्री से गंगाजल चलता है वह एक बिन्दु है। वह बिन्दु जानता है कि पचास मील की गति से चलते हुए चालीस घण्टे के बाद मैं दो हजार मील की यात्रा करके गंगासागर में मिल जाऊंगा। गंगोत्री से चलने वाला जलबिन्दु चालीस घण्टे के बाद गंगासागर में, विराट् में मिल जाने वाला है। तो दो दिन की जिंदगी लेकर आता है बिन्दु, उसके बाद उसको विराट् में मिल जाना है। यदि वह बिन्दु कहे कि मैं तो दो दिन के लिये जीऊंगा। मैं धारा में क्यों बहूँ? अलग हो जाऊं। अरे! अलग होकर देख लो। बिन्दु तू सूख जायेगा, बिन्दु तू मर जायेगा। बिन्दु तेरा अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। अरे बिन्दु! तू धारा में मिल जा, दो दिन जिंदगी है तो क्या है? हर हिन्दू जो आया है उसको एक दिन मरना है पर हिन्दू समाज को मरना नहीं है। इसलिये हिन्दू तू बिन्दु का जीवन छोड़कर के सिन्धु का जीवन जी, धारा को अमर बना जा। अमर गंगा सदा के लिये बहती रहेगी। बिन्दु रहे न रहे कौन-सा अंतर पड़ता है, लेकिन बिन्दु को यह समाधान होगा कि मैंने धारा में जीवन दिया है। इसलिये धारा को अमर बना दिया है। मैं अपने आपको धारा में समर्पित करके अपने जीवन को धन्य करने जा रहा हूँ। इस विश्वास के साथ हम जीयें कि हमारा जीवन धारा के लिये ही होगा, धारा को अमर बनाने के लिये होगा। अलग से सूख जाने वाले बिन्दु का हमारा जीवन नहीं होगा। यही परम पूज्य डॉ. साहब का, यही सम्राट् विक्रमादित्य का हमारे लिये आज के परिप्रेक्ष्य में सबसे बड़ा संदेश है।

रामगढ़ कैम्प में महाराजा अग्रसेन जयन्ती : (भाषण)

हमारा परम सौभाग्य है कि हम लोग रामगढ़ कैम्प में महाराजा अग्रसेन जी की जयन्ती बड़ी धूमधाम से मना रहे हैं। उनके जीवन और संदेश के बारे में एक स्मारिका का भी विमोचन किया गया है। और उस महान् वंश के फूल, सजीव फूल होकर श्रद्धांजलि महाराजा अग्रसेन के चरणों में चढ़ा रहे हैं। बहुत ही आनन्द का विषय है। क्योंकि पूर्वजों के पावन स्मरण यही हमें पथ से विचलित होने से बचाता रहता है ठीक दिशा दिखाता है। समाज के संगठन को बनाये रखता है और अतीत से प्रेरणाएं लेकर वर्तमान में दुर्धर्ष कर्म करके भविष्य की भावी योजनाओं के लिये अवसर प्रदान करता है। इसलिये हम इस अवसर का समुचित लाभ उठायें। महान् प्रेरणाओं को प्राप्त करें। तो हमें इतिहास में जैसा वर्णन मिलता है कि महाराजा अग्रसेन महाभारत काल से भी पहले इस धराधाम में अग्रोहा नामक स्थान पर राजधानी स्थापित करके वहाँ एक आदर्श रामराज्य स्थापित किये हुए थे। उनकी संताने जहाँ-जहाँ संसार भर में बिखरी, देश भर में, विदेश में भी गए, ये लोग अग्रसेन की संतति होने से अग्रवाल कहलाये। जैसे ही परशुरामजी का क्षत्रियों पर कोप प्रारम्भ हुआ उस समय अनेक जातियाँ बिखरी और भाग गयी। और उन्होंने कुछ व्यवसाय भी बदल लिए। कुछ लोग जाकर बरेली, रायबरेली में स्थान है जायस वहाँ पर बसे। तो वहाँ पर से आने वाले लोग जायसवाल कहलाने लगे। ये मलिक मुहम्मद जायसी जो कवि हुआ है हिन्दी का वह जायस का रहने वाला था। तो जितने जायसवाल लोग हैं उनका मूल स्थान जायस है। अग्रवाल बंधुओं का मूल स्थान अग्रोहा है। राजस्थान में एक-एक गांव के नाम पर भी मोहर लगा कर अनेक नाम चलते हैं। इसलिये बहुत से लोग अपने नाम के बाद वाल लगाकर प्रसिद्ध करते हैं। कुछ लोग वालिया भी लगाते हैं। इस तरह स्पष्ट है महाराजा अग्रसेन की संतानें अग्रवाल के नाम से प्रसिद्ध हुई। इतिहास के किस कालक्रम में किस खण्ड में, किन कारणों से, कैसे, राजा की संतति व्यापार में लग गई? और ये प्रसिद्ध वैश्य समाज व्यापारी वर्ग बनकर देश में प्रसिद्ध हुआ। और हमारे सारे देश की व्यापारिक स्थिति को सम्हाले रखा। यह बहुत बड़ा अद्भुत तथ्य है। रहस्य है कि इनका राज्य कैसे लुप्त हो गया? और भविष्यत् के लिए

राज्य न करके केवल व्यापार में लग गये वह काफी खोज का विषय होना चाहिये। इनकी संतानों में भी जैसा कि श्रीमान् गुप्ताजी ने बताया और ग्रंथों में भी वर्णन मिलता है इन्होंने अमरीका तक में विवाह किया। पाताल लोक में। वह भी अपने आप में बड़ा रोचक विषय हैं। इस पर भी बड़ी खोज करने की आवश्यकता है। दिल्ली में हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस में महामना मदन मोहन मालवीय जी एक समय प्रधान सम्पादक थे। उनके अन्तर्गत काम करने वाला एक पत्रकार था चमनलाल। वह स्वामी श्रद्धानंदजी (आर्य समाज के महान् नेता थे) का जामाता था तो उसने मालवीय जी से कहा मुझे कुछ नयी खोज करने का अवसर दिया जाए। तो उन्होंने उसको छः मास का अवकाश दिलाया हिन्दुस्तान टाइम्स से। वह लन्दन की Economic कांफ्रेंस में गया और वहाँ से अमरीका चला गया। अमरीका में उसने एक पुस्तक लिखी। 15 अगस्त 1937 में वह पुस्तक प्रकाशित हुई। उस पुस्तक का नाम उसने रखा The end of an Empire एक साम्राज्य का अन्त। उसकी प्रथम पंक्ति में उसने लिखा, भारत से ब्रिटिश साम्राज्य का अन्त होने वाला है। इस पर उसको गिरफ्तार कर देश निकाला दे दिया गया। वह वहाँ से छोड़कर आ गया मैक्सिको में। मैक्सिको में आकर देखते ही उसकी बुद्धि चकरा गई। उसने देखा कि शेष अमरीका के प्रदेशों की तरह यहाँ के लोग उन जैसे रीति-रिवाज नहीं रखते हैं। उनके समान पहनावा नहीं उनसे भिन्न पहनावा है। उसने देखा कि मैक्सिको की स्त्रियाँ साड़ी पहनती हैं। उसको अचम्भा हुआ। उनके चेहरे अमरीका के गोरे-चिट्टे चेहरे से कुछ भिन्न हैं। कुछ गंदुमी रंग लिये हुए है। उनके चेहरे में भारतीयता की झलक नजर आयी। उसको एक घर में भोजन के लिये ले जाया गया तो टेबल-कुर्सी पर भोजन नहीं हो रहा है। भोजन के लिये चौका की व्यवस्था है। उसने देखा भोजन के लिये लकड़ी का पाटा आ गया। पाटे पर भोजन दिया गया है। उसे और भी आश्चर्य हुआ कि बेकरी की ब्रेड जिसे डबलरोटी कहते हैं और जो सारे यूरोप-अमरीका में चलती है वह वहाँ नहीं चलती। वहाँ आ गयी तंदूर की रोटी, चपाती उसने नाम सुना रोटली। अरे! गुजराती शब्द रोटली यहाँ कहाँ से आ गया? उन्होंने कहा, रोटला। बहुत हैरान हुआ। उसने खोज करनी शुरू की तुम लोग कौन हो? उन्होंने कहा हम 'मय' हैं। मय शब्द है उसको, वे लोग Maya (माया) कहते हैं। खोजते-खोजते पता चला मय दानव था। जिसकी पुत्री मंदोदरी रावण को ब्याही हुई थी। मय दानव बहुत बड़ा सरदार था दैत्यों का। मय जो अंग्रेजी में लिखा जाता है उसको माया (Maya) लिखते हैं। उसने उनके मंदिरों में जाकर देखा, म्यूजियमों में जाकर देखा तो सूर्य के मंदिर हैं। विष्णु की मूर्ति, शय्याशायी विष्णु को देखा, दुर्गा को देखा। तो देखकर हैरान हो गया। यह क्या शिव, गणेश यह क्या है? चर्चों में जाकर देखा तो चर्चों के कोने में कहीं स्वस्तिक का चिह्न है, कहीं ओम् लिखा है कहीं घण्टी लटक रही है उसने पूछा तुम लोग

कौन हो? उन्होंने कहा 'मय' हैं 'माया' हैं। उसने खोज करनी शुरू की। मैक्सिको, बुल्गेरिया, पीरू, कोलम्बिया, अर्जेण्टाइना—सबमें खोज करनी शुरू की। उसने एक पुस्तक लिखी Hindu America वह अमरीका में 30 डालर की बिकती थी। भारत में भारती विद्या भवन मुम्बई ने ढाई रुपये में छापा है। मैं जो बोल रहा हूँ उसके चित्र भी दिये हैं। History of मैक्सिको। मैक्सिकन सरकार ने छापी है—उसने पृष्ठ तीन पर लिखा है—सबसे प्रथम वो लोग जिन्होंने उस धरती पर पांव रखा है जिसे आज अमरीका कहा जाता है वे ही लोग थे जो भारत से दक्षिण पूर्व एशिया की ओर चले, वहाँ अपनी संस्कृति का प्रसार करने के लिए दक्षिण पूर्व एशिया के साढ़े तीन हजार द्वीपों में, इंडोनेशिया में प्रचार करने के बाद वे लोग प्रशान्त महासागर से सीधे अमरीका जा पहुँचे।

अब आप मेल बैठा कर देख लीजिये। राजा अग्रसेन के पुत्रों के विवाह यदि पाताल देश में हुए हैं तो भारत की संस्कृति वहाँ पहुँची। उसके प्रमाण मिल रहे हैं। उस पर उन्होंने पूरी रंगीन फिल्म बनायी हिन्दू अमरीका। उन्होंने पुस्तक छापी हिन्दू अमरीका। उस पर उसने पंडित नेहरू को व डॉ. राधाकृष्णन् को लिखने को कहा। पंडित नेहरू ने भूमिका लिखी। डॉ. राधाकृष्णन् ने भूमिका लिखी।

अतः जो कल तक ऐसे अध्याय थे जिन पर विश्वास नहीं होता था, जिसको लोग कल्पना कहते थे वे आज प्रकट होने लग गए। इसलिए यह इतिहास कहता है कि उनके बेटों ने अमरीका में विवाह किया, तो उसमें कोई अत्युक्ति नहीं है। अचम्भे की कोई बात नहीं है।

नाग शब्द जो है जाति का नाम है। दो प्रकार की जातियाँ थी। टेगों और टोटिल। टेगों जो किसी विशेष वस्तु से, किसी विशेष पशु से घृणा करती थी, परहेज करती थी। जैसे मुसलमानों के लिए सूअर टेगों है, गाली है। और टोटिल जाति कौन है? जो किसी पशु को पवित्र मानकर उसकी पूजा करती थी। नाग की पूजा करने वाले नाग कहलाने लगे। इसलिए नागालैण्ड के नाग नाग की पूजा करते हैं। छोटानागपुर के नागवंशी नाग के पुजारी हैं। नागपुर के रहने वाले लोग नाग के पुजारी हैं। इसलिए नागालैण्ड के रहने वाले या छोटानागपुर के रहने वाले हैं, नागों की परम्परा है। इसमें कौन अचम्भे की बात है। डॉ. कालीदास नाग इतने बड़े महान् विद्वान् थे, M.A.Ph.D. थे, हिन्दू महासभा All India के President थे। तो वो नाग 'सांप' थोड़े थे। वे तो मनुष्य ही थे। इसलिए ऐसे परम्परा वाले लोग नाग हैं। यदि आपको अवसर मिले तो रावदी या रांची से 11-12 मील की दूरी पर एक स्थान है वर्मा। वहाँ साल में एक बार मेला लगता है। अब मेला लगने वाला है। विजयादशमी के पांच दिन बाद मेला लगता है। विजयादशमी के पांच दिन बाद जो आश्विन की पूर्णिमा आती है दो-तीन दिन का वनवासियों का आदिवासियों

का छोटानागपुर का सबसे बड़ा मेला होता है। वहाँ जाकर देख लेवें। भिन्न-भिन्न चिह्न वाले सब वनवासी अपने वैसे रूप बनाये हुए, बंदर, भालू, सिंह ये सब रूप बनाये हुए, नाग सब झण्डे लिये हुए हो-हु नाचते कूदते हैं। उत्सव मनाते हैं।

इसलिए इस प्रकार की जातियाँ थी। इसलिए उसमें भी कोई अचम्भे वाली बात तो नहीं हो सकती है।

यदि कोई है सबसे बड़ी घटना वाली बात तो राजवंशी लोगों ने राज्य छोड़कर व्यापार का धंधा कब से अपनाया। सिर को देखो तो राजा के। इस पर बहुत बड़ी खोज करने की आवश्यकता है कि व्यापार के धंधे में कब से आ गए? यदि मान भी लिया कि उनकी संतानों ने व्यापार भी किया। तो बहुत श्रद्धा से, आदर से इस समाज को नमस्कार करता हूँ कि भारत की जाति प्रथा, जाति व्यवस्था, काफी बिगड़ गई और दयानन्द सरस्वती ने कहा भारत की वर्ण व्यवस्था जो कभी इसकी जीवन व्यवस्था थी वह वर्ण व्यवस्था आज इसकी मरण व्यवस्था बन गई है—उन्होंने यहाँ तक कह दिया है। मैं उतनी दूर तक तो नहीं जाऊंगा पर इतना अवश्य कहूँगा कि काफी विकृत हो गई है। हर जाति ने दूसरी जाति के काम-धंधों में हाथ डाल दिया। शर्मा, Shoe factory शुरू हो गई। शर्मा ने जूते का कार्य करना शुरू कर दिया है। वर्मा shoe factory बन गई। सब काम गड़बड़ा गया है और कई शूद्र लोगों ने कहा हम भी सेना के अधिकारी बनेंगे। सेना में भरती हो गये, सेना का क्षत्रिय का काम शुरू कर दिया। इसलिए सबने अपने-अपने धंधे छोड़ दिये। केवल एक समाज है जिसने अपने व्यवसाय को आज तक छोड़ा नहीं, व्यवसाय के प्रति सच्चा रहा तो वह अग्रवाल समाज है। यह अपने कर्म में पक्का है। दूसरे के कर्म में टांग नहीं अड़ाई। किसी के धंधे के प्रति ख्वाहमख्वाह ललचाई दृष्टि नहीं रखी। अपना धंधा छोड़ा नहीं। अपने कर्म के प्रति सच्चा है और अपने कर्म के प्रति इतना सफल है कि इसकी सफलता पर पूरा देश टिका हुआ है। इसने जो धन उपार्जन किया, व्यवसाय किया, हमारे धन की वृद्धि की। इसने जो धन कमाया, इसने जो व्यवसाय में हमारे देश की वृद्धि की उस पर देश की खुशहाली टिकी हुई है। यदि पूरे देश की धुरी को कोई थामे हुए है तो यह समाज थामे हुए है। इसने अपनी धुरी नहीं छोड़ी, अपना व्यवसाय नहीं छोड़ा। व्यवसाय के प्रति सचाई से, ईमानदारी से लगा हुआ रहा। दूसरी ओर देखा नहीं, झांका नहीं, नौकरी-चाकरी की ओर मुंह नहीं डाला, नहीं ललचाया अपने व्यवसाय में दत्तचित्त होकर तन-मन-प्राण से लगा और उसको सफल करके दिखाया यह उसकी महानता है। कोई भी इस कार्य में लगा हुआ व्यक्ति असफल नहीं हुआ। इन्होंने मिट्टी को सोना बनाकर दिखा दिया। इसलिए इस देश को समृद्ध बनाने वाले, इस देश को धनवान बनाने वाले, इस देश को वैभवशाली बनाने वाले ये बंधु हैं महाराजा अग्रसेन की

संतति जिन्होंने इस देश को व्यवसाय द्वारा खूब समृद्ध बनाया। यदि देश सोने की चिड़िया था तो इनकी बदौलत था। यदि आज भी कुछ धन इस देश के पास है तो इनकी बदौलत से। यदि देश भविष्य में उठ सकेगा तो इनके द्वारा उठ सकेगा। राणा प्रताप के पास कुछ नहीं बचा। वे स्वयं घास की रोटी खाते थे। घास की रोटी भी बिलाव लेकर चला गया, तो बच्चा रोने लगा तो बच्चे के रोने को देखकर राणा प्रताप की आँखों में आंसू आ गए। सब राजपूत तो साथ छोड़-छोड़ के अकबर के साथ जाकर मिल गये थे। राजपूत सैनिक ने देखा स्वयं राजा तो घास की रोटी खा रहा है, हमें क्या खिलायेगा? हमको देने के लिए वेतन तो है नहीं। स्वयं घास की रोटी पर जीता है। हम, बीबी-बच्चे घास की रोटी पर थोड़े जीएंगे। घास की रोटी पर कोई नौकरी नहीं करता इसलिए सब सैनिक भी साथ छोड़-छोड़ कर चले गए। 30-35 सैनिक बचे थे और तीन-चार सौ भील लोग बचे थे। राजपूत राजा लोग तो पहले ही साथ छोड़ कर जा चुके थे। उन्होंने कहा जिनका इतना बड़ा राज्य सारे भारत में फैला हुआ है, चतुरंगिणी सेना है सब राजपूत राजा भी उसके पास चले गए हैं, सब सैनिक भी चले गए हैं अब उससे लोहा लेना सम्भव नहीं है। इसलिए पहाड़ी पर चढ़कर अपनी चित्तौड़ की भूमि को प्रणाम किया। आंखों में आंसू बहाए। चित्तौड़ की भूमि 'मैंने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक तुम्हें स्वाधीन नहीं कराऊंगा तब तक में महलों में प्रवेश नहीं करूंगा। सोने-चांदी के पात्रों में भोजन नहीं करूंगा, मैं घास-पात की रोटी खाऊंगा। मेरी प्यारी चित्तौड़ भूमि! किस शक्ति से, किस बल से स्वाधीन कराऊं मेरे पास सैनिक नहीं बचे। मेरे पास कुछ साधन नहीं बचा। इसलिए चित्तौड़ की भूमि मैं तुझे प्रणाम करता हूँ। तुम्हें छोड़ रहा है, स्वाधीनता का पल्ला नहीं छोड़ता, अपनी प्रतिज्ञा नहीं छोड़ता। मैं तुझे छोड़कर जा रहा हूँ कि मेरे पास सैनिक एवं साधन नहीं बचे। निराश होकर, आंसू बहाकर प्रताप जा रहा है एक बूढ़े व्यक्ति ने आकर प्रताप के चरण थाम लिए। अब आप जाएंगे नहीं। स्वाधीनता के महान् सैनानी आप नहीं जायेंगे। कहाँ जा रहे हो प्रताप? उन्होंने पूछा कौन है चरणों में? भामाशाह। भामाशाह आप! हाँ मेरे पूर्वजों ने आपकी सेवा की थी। आप चित्तौड़ की भूमि को छोड़कर के जा रहे हैं मेरा धन किस काम आयेगा। सब धन आपको समर्पित कर रहा हूँ। इससे 16 हजार सैनिक 12 साल तक भोजन कर सकेंगे। प्रताप हैरान! इतना धन आप मुझे किस लिये दे रहे हैं? क्यों दे रहे हैं? यह धन आपका है। यह धन मेरा नहीं हैं। मैं नहीं ले सकता। इदं न मम् यह आपका ही है। भामाशाह आंसू भर के कहता है आपका है, चरण पकड़ कर कहता है आपका है। दुहाई आपके नाम की। देश की इज्जत की। यह आपका है इसे आप स्वीकार करें, इसे ठुकराये नहीं। इस प्रकार का इस देश का वैश्य, इस देश का यदि अग्रवाल सेठ ऐसा होगा जो देश की स्वाधीनता के लिए अपनी और अपने पूर्वजों की सारी कमाई को राष्ट्र के चरणों

पर चढ़ा देगा। तो फिर इस देश का बाल बांका कौन कर सकता है? यह महान् दिव्य लोग, इतना दिव्य समर्पण जो इनके मन में महाराजा अग्रसेन के काल से चला आया है। इस देश को, समाज को वैभवशाली समाज बनाकर रखा है। और जब तक इस परम्परा को जीवित रखेंगे तब तक हमारा और हमारे देश का बाल बांका कोई नहीं कर सकेगा।

हम लोग प्रायः सोचते हैं पश्चिम की चकाचौंध के सामने हम लोग पिछड़ गये हैं, यह हो गये हैं, वह हो गये हैं। घटिया हो गये हैं। मैं एक उदाहरण देता हूँ कि जो मैं स्वयं जानता हूँ, मेरे एक कोलकाता के मित्र हैं। वो आक्सफोर्ड में पढ़ने के लिये गये। तो वहाँ से पढ़-लिख कर आये। एक-दूसरे ऑक्सफोर्ड के मित्र प्रो. को Research कराने के लिये National लाइब्रेरी ले जाते थे। वहाँ से लौटते खिदिरपुर में किसी दूकान में चाय पीते थे। दूकान का मालिक धोती पहने हुए, यज्ञोपवीत पहने, बहुत गर्मी होने से पसीने से लथपथ गंजी उतार कर रख देता था। और गंजी पहना हुआ भी होता था तो वह पसीने से भरी हुई, ग्राहकों से पैसा लेने में और नौकरों को डांटने में लगा हुआ, छोटी सी दूकान थी। तो वह ऑक्सफोर्ड का प्रो. कहता था कैसी दूकान है? गन्दा भारत है, गरीब भारत है इन लोगों के कुछ नहीं हैं, न होटल रखना आता है और न कुछ रखना आता है। देखो, इंग्लैण्ड में जाकर देखो होटल। First class होटल है एक मक्खी नहीं, कूड़ा नहीं। कुछ भी कूड़ा-कचरा नहीं है। वहाँ इतनी आलीशान बिल्डिंग बनी होती है। यहाँ कुछ नहीं है। एक फूस की झोंपड़ी खड़ी कर ली है और वहाँ दूकान चला रहा है। यज्ञोपवीत पहने बैठा है तिलक लगा लेता है कहाँ का बनिया है जी। अजीब आदमी है। बड़ा घटिया आदमी है। हमारे यहाँ होटल का मैनेजर देखो कितना बढ़िया आदमी है। कितना सूट-बूट-टाई लगाकर रहता है। वहाँ होटल में मालिक है, मैनेजर है, वहाँ होटल में बेंड-बाजा बजता है। नंगा नाच होता है यह होता है, सब लोगों के लिये बढ़िया-बढ़िया सामान आता है। कितनी सफाई है। मैं हिन्दुस्तान से घृणा करता हूँ। रोज-रोज यह कहता था। दोनों ही भारतीय थे। पर एक इंग्लैण्ड का बुखार लेकर आया हुआ था। इसलिए इंग्लैण्ड का बुखार वाला रोज गालियाँ देता था। आलोचना करता था। धिक्कारता था। गन्दा भारत, गन्दा भारत।

एक दिन लाइब्रेरी में ज्यादा देरी हो गई। लौटकर आए तो सारा बाजार बंद हो गया। उन्होंने कहा भई आज तो नाश्ते का, भोजन का स्थान नहीं बचा। जिस होटल में रोज चाय-वाय पीते थे उन्होंने भी अपने दरवाजे आदि झुका दिये थे। मालिक ने कहा होटल बंद हो चुका। ऑक्सफोर्ड वाले प्रोफेसर ने झांक कर देखा तो भीतर अन्दर चूल्हे पर कुछ रोटियाँ बन रही थी। उसने रोटियों की ओर संकेत करते हुए कहा रोटियाँ तो बन रही है। मालिक उन्हें भीतर ले गया और आदर

पूर्वक स्वयं दो थाली में भोजन परोस कर लाया, उन्हें उस दिन बड़ी तृप्ति हुई। वे विस्मय में थे कि जो मालिक स्वयं गद्दी पर बैठे हुए नौकरों से काम कराता था वह स्वयं अपने हाथ से इतनी सेवा क्यों कर रहा है? भोजन के उपरांत जब ऑक्सफोर्ड वाले प्रोफेसर ने पूछा कि बिल कितना हुआ, तो मालिक ने हाथ जोड़कर कहा हमें लज्जित न करें। हमारा होटल बंद हो चुका। यह भोजन आपको अतिथि रूप में कराया। पैसे का नाम लेकर अतिथि धर्म को कलंकित मत कीजिये। प्रोफेसर ने बहुत कहा कि दूकान तो यही है, यहीं पर दोनों सामान बनते हैं। पर मालिक ने कहा कि दूकान की अपनी मर्यादा है। दूकान बंद हो चुकी है। पर भोजन दूकान के लिये नहीं हमारे निजी प्रयोग के लिये बन रहा था। इसका पैसा लेने से हमारा धर्म नष्ट हो जायगा। इस दृश्य से उस प्रोफेसर की आंखें श्रद्धा से गीली हो गई और उसने कहा—This is Wonderful India. इंग्लैण्ड में होटल में भोजन करने पर सगे भाई से भी चार्ज लिया जाता है। किंतु भारत में नितान्त अपरिचित व्यक्ति को निष्काम भाव से भोजन कराना अतिथि धर्म माना जाता है। उस दिन उसे समझ आया कि भारत के निर्धनता के फटे चिथड़ों के नीचे भी भारत की दिव्य आत्मा छिपी हुई है। अतः उस दिव्यता को समझते हुए स्वयं के विषय में और देश के विषय में ग्लानि नहीं आत्मगौरव का भाव जगायें। कुछ काल के लिये हम दब अवश्य गये हैं। पर अब भारत उठ कर रहेगा।

हम भारत की दिव्य परम्परा, अपने पूर्वजों की पुण्य परम्परा को, वीर परम्परा को अपने हृदय में संजोते हुए आगे बढ़ें तो हमें यशस्वी होने से कोई रोक नहीं सकता। पुनः भारत के जगद्गुरुत्व में कोई आंच नहीं आ सकती। हम महान् भारत के महान् पुत्र-पुत्रियाँ सिद्ध होंगे। सारा विश्व पुनः हमें आदर्श के रूप में स्वीकारने को बाध्य होगा। अग्रसेन महाराजा की जय।

'हमें भारत एवं भारतीयता में अवश्यमेव विश्वास होना चाहिए, और ऐसा कभी नहीं होना चाहिए कि हम भारत माता के प्रति मात्र मौखिक प्रशस्ति के नारे भी लगाते रहे तथा साथ-साथ सदा उसे अमेरीका, तुर्की, इंग्लैण्ड या रूस की भोंड़ी प्रतिलिपि बनाने का प्रयास भी करते रहें।'

योगी कृष्ण प्रेम

(पूर्व में, इंग्लैण्ड निवासी प्रो. रोनाल्ड निकसन)